

भोजपुरी डाइजोस्ट

पुरुवैया

प्रतीक्षांक
स्वर्ण जयंती
१५ अगस्त १७

उछाह

संस्थापक

श्री गणेश चौबे
 डा. कृष्णदेव उपाध्याय
 डा. परमेश्वरीलाल गुप्त
 डा. विद्यानिवास मिश्र

संरक्षक

श्री सतीश त्रिपाठी, आ.प्र.से.

डा. गंगेश गुंजन

श्री जयनारायण राय

डा. रामदेव शुक्ल

डा. विश्वनाथ प्र० तिवारी

डा. अरुणेश नीरन

सम्मानित सम्पादक

जयब्रत राय

सम्पादक

पाण्डेय आशुतोष

सुमित अग्रवाल

उपसम्पादक

दिनेश 'भ्रमर'

बी.एम. डी अग्रवाल

डा. प्रतिभा मिश्रा

व्यवस्थापिका

रिटी अग्रवाल

संयोजक

ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

पत्राचार

'पुरुवैया'

भारद्वाज मुद्रणालय

पो. मलकौली-८४५१०५

प. चम्पारण (बिहार)

सम्पर्क

पी-१०३, चितरंजन पार्क

नई दिल्ली-१६ फोन: ६४८६५७५

लेजर कम्पोजिंग

सृजनी, डी-६३०, चितरंजन पार्क,
 नई दिल्ली-१६ फोन: ६४६ ६६६३

हमें अखिल भारतीय भोजपुरी संगठन के अध्यक्ष आ पुरुवैया के संपादक श्री पाण्डेय आशुतोष के चिह्नी मिलल ह, जबना से ई जान के हमरा अपार खुँसी भइल ह कि भोजपुरी 'पुरुवैया डाइजेस्ट' का पहिला अंक के एह महीना का अंत में लोकार्पण होई। भोजपुरी में अनेक पत्र-पत्रिका समय-समय पर प्रकाशित होत रहल, लेकिन डाइजेस्ट अइसन पत्रिका के अभाव बनल रहल। ई एगो खटकेवाली बात रहल। श्री पाण्डेय आशुतोष अउर सुमित अग्रवाल का प्रयास आ उनका कुछ साहित्यप्रेमी सहयोगियन का उदार योगदान से भोजपुरी साहित्य जगत के ई अभाव दूर हो रहल बाटे। एह भयंकर महंगी का जुग में डाइजेस्ट अइसन पत्रिका निकालल कवनो हँसी-खेल नइखे। ई बहुत हिम्मत, दृढ़ संकल्प आ आत्म विश्वासे से पूरा हो सकेला। श्री पाण्डेय आशुतोष में ई सब गुन मौजूद बाटे। एह से हम एह पत्रिका का सुदीर्घ जीवन के कामना करत बानी आ अपन आशीर्वचन भेज रहल बानी।

गणेश चौबे

ग्रा० पो० बंगरी १२/८/१६६७

द्वारा-पिपराकोठी

पूर्वी चम्पारन, (बिहार)

“पुरुवैया”

(भोजपुरी डाइजेर्स्ट)

आदरनीय,

आज ‘पुरुवैया’ के प्रतेशांक रउरे हाथ में सौंपत हमार मन खुसी से छलक उठल बा। कम से कम एतना दिन के सपना पूरा त भइल। लाज भी आवता देर भइले से लेकिन अपने सभन छमा कर देब। कई कारन बा लेकिन हमार बेमारी प्रमुख, ना त कबे हम ई सुभ काम पूरा कर देती। जे लेखक-कवि के एतना दिन ले अगोरे के परल ओह सभे लोग से हमार निहोरा बा कि हमरा कमी पर धेयान ना दई सब।

हाँ, हम बबुआ सुमित अग्रवाल आ रिंटी अग्रवाल के बहुत-बहुत आभारी बानी जे ई लोग दिल्ली जड़सन महानगर में एगो आपन घर के पहिचान बना देबे वाली भोजपुरी भासा खातिर यथासामर्थ्य कोसिस कइ के एगो रूप ‘पुरुवैया’ के देहल लोग।

एगो बात के हमरा दुख बाटे कि राजधानी जेतना हमरा के भरोसा देहलस ओतना ना कइलस। सब से पहिले जब ‘भोजपुरी डाजेस्ट’ निकाले के हमरे मन में बिचार आइल तब पहिला राय खातिर हम डा० परमेश्वरी लाल गुप्त जी के नासिक के पता पर पाती लिखनी आ ऊहां के हामी भरनी। डा० विद्यानिवास मिश्र जी जब नवभारत टाइम्स में रहनी तबे ऊहां के आसीस देहनी। हम सब के पै लगी करत बानी।

हाँ, ‘पुरुवैया’ पढ़ के हमरा के पाती जरूर लिखब—चाहे निमन लागे चाहे बाऊर—लिखब जरूर। हम पाती के बाट जोहब।

अपने के हितू—

पाण्डेय आशुतोष
सम्पादक

“भोजपुरी के दिसा, दसा आ सम्भावना”

स्व. डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

५, गुरुधाम कालोनी,
दुर्गाकुंड मार्ग, वाराणसी

“भोजपुरी क्षेत्र के आर्थिक व्यवस्था अउर सांस्कृतिक उत्थान में रोड़ा डालेवा भोजपुरिया लोग ही बा। अधिकांशतः पढ़ल-लिखल लोगन के हृदय में आपन भासा क्षेत्र अउर अर्थव्यवस्था के प्रति प्रेम नइखे। लोग आपन बोली बोले नइखे चाहत, लजाता लोग। पूछला पर कि रउआ कहाँ के हई त आपना जिला के नाम बलिया, गाजीपुर ना बता के, कहेला लोग—“बनारस के तरफ का हूँ”। इहाँ से गइल विदेश में रहेवाला लोग “दिल्ली का हूँ” कहेला लोग। अधिकांश लोग एह बात के तारीफ करेला कि मैथिली, बंगाली जब मिलेले त अपने भासा में बोलेले। त हमनी के काहे नइखी बोलत। काहे समझ तानी जा कि भोजपुरी भदेशी बोली ह।

हम अउर हमार मेहरारू, अमेरिका में सालन भोजपुरिये में बोलीं जा। बाकी इहाँवा आके भोजपुरी बोले में डर लागे लागत बा, कि इहाँ के लोग हमरा के देहाती जनि बुझे लागे। अपना ही क्षेत्र में भोजपुरी बोलत सुनि के लोग अकबका जाता।



भारती-वन्दना

धनुषधारी ‘कुशवाहा’
ग्राम, पोस्ट—खगनी
वाया—सेमरा स्टेशन
पूर्वी चम्पारण (बिहार)



गोड लार्गी, पईआं परी करी हम पूजनवां
दरस के लालसा हमार, मझआ सारदा !!

नाम बा अनेक एक रूपवा तोहारी
सुमिरी ले भोर भिनुसार, मझआ सारदा !!

ग्यानवां तू बांटझझआ बीनवां बजा व
हंसवा पर होइके सवार, मझआ सारदा !!

हिअरा में हरदम तोहरे सुरतिआ
कब होई दरस तोहार, मझआ सारदा !!

तोहरे चरनिआ में हमरो जिनिगिआ
कच्छवा पर हो जा ना सवार मझआ सारदा !!

ज्ञान, विज्ञान, मझआ सभका के दिहलू
अब बाटे पलहा हमार, मझआ सारदा !!

★ ★ ★

“भोजपुरी क्षेत्र के हिन्दी विद्वान्”

बड़े-बड़े विश्वविद्यालय में खड़ी बोली के हिन्दी के प्राध्यापक अवरु आचार्य लोग TA-DA लेके भोजपुरी सम्मेलन में आवत बा अवरु लेकचर अइसन देता लोग जइसे भोजपुरी से उनका कुछ लेवे-देबे के नइखे—“आपलोग भोजपुरी के लिए इ करी उ करि”।

सीवान में एक वर्ष पहिले एगो जिला से सम्बन्धित भोजपुरी सम्मेलन भइल। ओमे दिल्ली से आने वाला दू गो भोजपुरी क्षेत्र के हिन्दी विद्वान्न के Round Trip 1st Class Ticket अक्षयवर दीक्षित भेजत रहनी उ देखवनी। इ हिन्दी के विद्वान बिना टिकट लेले “टस से मस” ना होले। इ लोग भोजपुरी खातिर का करिहें ?

“विश्वविद्यालय में सिलेबस”

दू चार वर्ष पूर्व बाबू कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति सुरेन्द्र सिंह भोजपुरी के M.A. में रखलीं। जे लोग भोजपुरी के नामो ना जानत रहे उहो Text Book लिखे लागल।

“सम्मेलन के मेमोरन्डा”

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आरा १९६३ अवरु मुबारकपुर १९६४ में भोजपुरी के विकास पर आतना मेमोरन्डा पास भइले स जवन डाक से शायद सरकार तक भेजलो नइखे गइल। मुबारकपुर में श्री प्रभुनाथ सिंह जी के नेतृत्व में जवन भोजपुरी पर वार्ता भइल ओसे हामरा लागल कि ठाकुर साहब कुछ जरूर कइके रहियें। काहे कि उहाँ के बाड़ा दृढ़-प्रतिज्ञ लगनीं। एक साल हो गइल उहो।

“टाँय-टाँय फिस” हो गइल।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन देवरिया त भोजपुरी के नाँव पर धोखा रहल हा। जे प्रतिनिधि बाड़ा आशा कइले रहले कि भोजपुरी के नाँव पर इहाँ कुछ होई। घरे उदास अवरु क्रूद्ध लवटले हा। जवन भी भोजपुरी के वृद्धि में सहयोग मिले के आशा रहे उहो अप्रैल २७, २८, २६, १९६५ के मरि गइल। (पहिले पहिले के परब रहे। देवरिया अइसन जगह में ‘विश्व भोजपुरी सम्मेलन’ भइल इहे लमहर काम रहे—सम्पादक)

भोजपुरी के नाँव पर स्वार्थ”

बहुत लोग भोजपुरी के उत्थान खातिर बतियावत बा। बाकी आपना स्वार्थ के ही सामने रख के। स्वार्थ कवनो बुरा चीज ना ह। आदमी भगवानो किहाँ स्वार्थ से जाले। बाकी हमनी के भोजपुरी के नाँव पर अपन स्वार्थ के बढ़ावा देत बार्नी जा। एही से भोजपुरी कतहूँ जात नइखे—बढ़त नइखे। भोजपुरी के लेके मंत्री, अधिकारी से दोस्ती कइके आपन काम निकाले के उद्देश्य रहत बा। बहुत लोग फोटो अखबार में छपदा के सस्ता प्रचार लेके आपन फायदा उठावे चाहत बा।

“अर्थ व्यवस्था”

हमनी के प्रांत ना चाहीं बलिया अवरु वक्सर के सड़क आच्छा बनि जा स। गाड़ी के डब्बा में ना, गाड़ी के ऊपर बझिठि के इ माटी के सपूतन के दिल्ली अउरु पंजाब ना जाये के पड़े। आपना प्रदेश में ही नौकरी मिले। एह क्षेत्र के आर्थिक विकास होखे। जब आदमी घर में सुखी ना रहे तबही घर छोड़ी के जाये चाहेला। दूसर प्रांत बनावे के सोचेला।

(शेष पृष्ठ १० पर)

दू ग़ज़ल

ग़ज़ल आ गीत

दिनेश 'भ्रमर'

गीतायन, पो. मलकौली-८४५१०५

प० चम्पारण

आँखि से आँखि कबो मिल जाला।
फूल त फूल काँटो खिल जाला॥

छोट-बड़का हड एगो चिनगी से,
बड़का-बड़का करेज हिल जाला॥

देखि के उनके लोर के चूअल,
पथरो के हिया पिघिल जाला॥

अजबे होला डगरिया नेहिया के,
बिना बिछली के पग बिछिल जाला॥

*

नजरिया के बतिया नजरिया से कहि द
ना चमके सोनहुला किरिनियां से कहि द॥

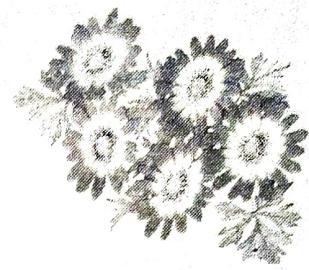
नयन में सवनवा बनल बा पहुनवा,
सनेसवा जमुनिया बदरिया से कहि द॥

लिलारे चनरमा के टिकुली बा टह-टह
लुका जाय कतहूँ अन्हरिया से कहि द॥

न आवेले सब दिन सुहागिन ई रतिया,
तनी कोहनाइल उमरिया से कहि द॥

नयन के पोखरिया भइल बाटे लब-लब,
न छलके भरलकी गगरिया से कहि द॥

✿



डॉ० अशोक द्विवेदी

संपादक "पाती"

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स,
बलिया-२७७००९

काठ कोरो ले खा गइल पानी,
फेर दुआरी ले आ गइल पानी।

का पहाड़न के दिल बनी झरना,
धोंट भरते ओरा गइल पानी।

एगो अँकड़ी से बनल सौ चेहरा,
कूलिह चेहरन के खा गइल पानी।

फेरु सपनन के हरियरी लीलत,
सून अँखिया समा गइल पानी।

आब आ आबरू रहे पहिले,
अब इहाँ से भुला गइल पानी।

★

जिस तरह तू बोलता है उस तरह तू लिख !
और इसके बाद भी सब से बड़ा तू दिख !!

—भवानी प्रसाद मिश्र



रएनियाँ
बिलमे ना !
केहू कले—कले मन में समाय
रएनियाँ बिलमे ना !

दूध छलकावे चान
अँगनइया—मचान
केहू जोन्हियन फाँड़ भरि जाय
रएनियाँ बिलमे ना !

लोरे कमल नहाय
जल—बिच कुम्हिलाय
नैन —पँखुरिन लोर टँगि जाय
रएनियाँ बिलमे ना !

तिप—तिप चुवे रस
मद चढ़े बरबस
गंध बेइंली दे निनियाँ उड़ाय
रएनियाँ बिलमे ना !

हिया उठे उदबेग
पिया सुते निरभेद
भोरे चिरई क बोलिया सुनाय
रएनियाँ बिलमे ना !

ग़ज़ल

—पाण्डेय आशुतोष
पो० मलकौली—८४५१०५
प. चम्पारन

धूप में गुलमुहर कि जइसे तू !
छांव में दूपहर कि जइसे तू !!

पांव बेड़ी भरल कि जइसे हम,
नीन मातल सफर कि जइसे तू !!

धी में, सक्कर में, फूल का रस में,
मीठ छीपल जहर कि जइसे तू !!

गीत—लय हम, ग़ज़ल के तेवर में,
छोट फुदुकत बहर कि जइसे तू !!

भोरहरिया में ओस से भींजल,
फूल गदरल मटर कि जइसे तू !!

(‘भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका’ से)

इयादि ओह सत्पुरुष के

डॉ० विवेकी राय

विवेकीराय मार्ग, बड़ीबाग, गाजीपुर

पटना में भोजपुरी अकादमी के स्थापना भइल, एह भासा का उत्कर्ष के एगो महत्वपूर्ण मंजिल का रूप में बा। एह मंजिल पर चोंहप के जेकर-जेकर नांव याद आवत बा, ओहमें एगो नांव बहुत वजनदार बा, केदार पाण्डेय। स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय स्वयं कुछ लिखलन ना बाकिर भविष्य में भोजपुरी भासा में लिखे-पढ़े वाली पीढ़ियन खातिर बहुत पोख्ता इन्तजाम कइ गइलन। भोजपुरी भासा के अइसन-अइसन दू-चारिगो समर्पित समर्थ सेवक मिलि जइते त ई कहाँ से कहाँ चलि जाइति। बाकी विधि के विधान अइसन कि अचके में मिलले सेवक छिना गइले।

अइसे त पटना में कई बेरि दर्सन करे के सुयोग मिलल आ हर बेरि भोजपुरी का सपनन में बूङ्गल एगो साहित्यप्रेमी राजनीतिक राजपुरुष का भेस में दखि के मन तृप्त भइल बाकी पिछला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अमनौर (सारन) वाला अधिवेसन में आ एकरा से पेश्तर भोजपुरी अकादमी, पटना का वार्षिकोत्सव में, एह दू मौका पर पाण्डेयजी के दर्सन भइला पर जवन भोजपुरी का विस्तार खातिर छटपताट रूप देखे के मिलल ऊ बिसरे लायक नइखे।

काहे बिसरे लायक नइखे, एकर एगो खास कारण बा। ओह कारण में आपन स्वार्थ बा। स्वार्थ व्यक्तिगत नइखे, ऊ साहित्यिक विषय के सार्वजनिक स्वार्थ जइसन बा बाकी स्वार्थ स्वार्थ ह। हम सोचत बानी कि धन्य बा ऊ व्यक्ति जे दूसरा

का स्वार्थ के ओकरा कहे से पहिले अपनहीं उठा लेत बा, अत्यन्त ईमानदारी आ नेक नीयती से। असल में अइसने परहितचिन्तन के सुभाव कवनो आदमी के महान बनावे ला। आजु का हवा में अइसना महान अदिमिन के टोटा परल जात बा। नयी पीढ़ी के बुद्धिजीवी आ प्रसासक लोग त अपना के एकदम सिकोरि के कछुआ नियर बना घलले बाड़न। मन व्यक्ति का संकुचित अहं का बाहर निकलते नइखे। बहुत कठोर लाइन अपना चारूओरि खिचाइलि बा। कइसे देस-जाति के बेड़ा पा लागी? कइसे अपना गुड़ुरा से बहरिअइहें आजु के बुद्धिजीवी आ प्रसासक लोग? कइसे स्वहित आ अहित का मारीचि-सुबाहु से भोजपुरी जइसन भासा का सिद्धाश्रम के रक्षा होई? कइसे 'सहित' का भाव से भरल साहित्यिक यज्ञ पूर्ण होई? कवनो ऋषि तुल्य व्यक्ति का संकल्प लेके आगे बढ़े के परी।

बस, एही आगे बढ़े वाली बाति के हम पहिले उठवले रहलीं हैं। भोजपुरी अकादमी पटना का वार्षिकोत्सव में पाण्डेय जी हमके निगिचा बोला के कहलन कि अब उत्तरो प्रदेस में भोजपुरी अकादमी बने चाहीं। हम कहलीं कि बिहार जइसन हवा उत्तर प्रदेस में नइखे त उहाँ का बहुत दृढ़ता से कहलीं कि हवा त अइसन चीज ह कि हर जगह रहे ले आ कतहीं ना रहेले। जहाँ ना रहे ले उहाँ बनावल जाले। बिहार में बनावे के परल रहे आ उत्तरो प्रदेश में बनावे के परी। एकरा बाद सरकारी स्तर पर अपना प्रयत्न

के रूपरेखा उहाँ का बतवलीं। मालूम भइल कि प्रयत्न एह सीमा तक हो गइल बा कि उत्तर प्रदेश में सरकार बिहार सरकार का भोजपुरी एकादमी के 'वाइलॉज' आ कार्यपद्धति के विस्तृत विवरण भँग के अध्ययन कइल जा रहलि बा। कुल्हि काम ठीक बा। बस तनिक ओकरा के समर्थ हाथन से उकसावे के बा। एकरो कार्यक्रम का बारे में पाण्डेय जी विस्तारपूर्वक बतवलीं।

जतना देर ले बाति भइल ओतना देर ले बारम्बर मन में आवत रहे कि भारत सरकार के ई रेलमंत्री बोलत रहल ह कि एगो भोजपुरी के सिपाही ? एकदम ठेठ भोजपुरी में, ओकरा भीतरी दाह संगे। अपना मंत्री, के, अपना राजपुरुष के आ अपना राजनीति कर्मी व्यक्ति के तनिक देर खातिर हटा के एगो विकासशील भासा आ ओकरा साहित्य के बढ़ती का आपाधापी में बूड़ल ओह व्यक्ति के का भूलल जा सकेला ? अतना ऊँचा पद पर चोंहपि के निचलकी ज़मीन का सवालन का संगे जुड़ल रहल मामूली महानता के बाति ना रहल। साहित्यिक सवालन के हालति त आजु काल्कि अपनहीं बहुत खस्ता हो गइल बा। साहित्य 'बेचारा' हो गइल बा, एकदम अपूछ ! भोजपुरी में एगो कहाउति कहलि जाले कि 'ए छूछा तोके के पूछा ?' माने ई कि जे छूछ बा, खाली हाथ बां ओकर केहू हेरी-खोजी नइखे।

त का सचहूँ आजु साहित्य एकदम छूछ हो गइल बा ? लागत त अइसने बा। कवनो समय रहे कि साहित्य सबका सहित रहे, भरल-भरल रहे, ओकरा पास शब्द रहे, ओकरा पास शब्दन के अर्थ रहे आ ओकरा पास भाव के अथाह-अकूत सम्पदा रहे।

आजु हालत उल्टा हो गइलि बा। साहित्य के सगरे भूल्य आ मानदण्ड नष्टप्रष्ट हो गइल बाड़न स। ओकर मान-सम्मान घटि के शून्य डिग्री पर चलि गइल बा। ओकरा प्रभाव पर प्रश्नवाचक चिन्ह ना, गुणे के निशान लगि गइल बा। जब ले ऊ धर्म से के जुड़ल रहे तबले त खैरियत रहे बाकी जबसे ऊ अर्थ से जुड़ि गइल तबसे अर्थ त हाथ से निकली गइल शब्दों के जमीन खिसकि गइल। आजु ऊ सर्वहारा हो के राजनीति का पाछा-पाछा चले के मजबूर हो गइल बा। ओने राजनीति बा कि बहुत क्रूरता का संगे ओके धक्का पर धक्का देति चलति बा। बेचारा साहित्य एकदम टूटि के चकनाचूर हो गइल बा।

योरप में त साहित्य आ साहित्यिकार का टूटन के हल्ला बहुत पहिले भइल बाकी हिन्दुस्तान में सुराज का बाद यानी लोगतंत्र का स्थापना का संगे-संगे हालत बिगड़ल शुरु भइल। अब त माने के परत बा कि शब्द सगरे खोखला हो गइलन स एकदम अर्थहीन। अर्थ में अर्थ ना रहि गइल, शब्दन का टूटला से ऊ अनर्थ के रूप हो गइल। इहे हालि हो गइलि मनई के। भाव अभाव हो गइल। जवना युग में कविता अकविता हो गइलि, कहानी अकहानी हो गइलि, आस्था अनास्था में बदलि गइल ऊ सब कुछ अस्वीकार बोध का आधुनिकता में बूड़ि गइल ओह युग में तब का रहि गइल। सचहूँ साहित्य आ साहित्यिकार छूछा हो गइल। ओके पुछवैया केहू ना रहि गइल। स्वार्थ खातिर इस्तेमाल हो गइला में आ पूछ भइला में फरक होला। छूछा आदमी के प्रतिनिधि साहित्यिकार आजु रोवत फिरत बा, कतहीं ओकर पूछ नइखे, केहू हेरी-खोजी नइखे !

अइसना हालति में अइसन महान व्यक्ति जब आगे बढ़ि के एगो मामूली साहित्यसेवी आ एगो जमीन छोड़ि के उठति भासा का साहित्य के पूछत बा, ओकरा सुख-दुख आ बढ़ती का बारे में सोचत बा, खुद कुछ करत बा, ओके भरपूर समय देत बा त एह के का कहल जाई ? मने मन केतना मानल जाई ?

फेरु अइसने चीज भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का अमनौर वाला अधिवेशन में देखे के मिललि। मंच पर पाण्डेय जी राजपुरुष या प्रशासक रूप में ना, भोजपुरी का सेवक का रूप में बिराजमान मिललन। बहुत जुझारु भासा में भोजपुरी के पक्ष लेके भाषण कइलन आ कुछ मुद्दन पर सरकार के आलोचनों कइलन। पाण्डेय जी का ललकार में बहुत वजन रहे आ ओही सुर में मंच पर ऊ उत्तर प्रदेश का सरकार के ललकारि बइठलन त हमरो कान खड़ा हो गइल। पटना वाली बाति यादि आइलि। ओह, एह आदमी का भीतर कइसन विकट भोजपुरी-प्रेम भरल बा ! बहुत साफ आ दू टूक शब्दन में मंच पर पाण्डेय जी कहलन कि उत्तर प्रदेश में भोजपुरी अकादमी बनावे के अगुआई हमहीं करवि।

अब हम सोचत बानी कि काश कि उनका के अइसन अगुआई करे के मोका मिलल रहित। तब संभव रहे कि ऊ कुल्हि कठिनाइयनों के हल मिलि गइल रहित

जवना के डॉ. नामवर सिंह उठवले रहलन। अमनौर वाला भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन में डॉ. नामवर सिंह कहलन कि उत्तर प्रदेश में कठिनाई ई बा कि भोजपुरी अकादमी का बनते ब्रज, अवधी, बुन्देली आ पहाड़ी आदि भसवन के आठ गो अकादमी बनावे खातिर लोग कपार पर चढ़ि बइठिहन। बाद में डॉक्टर नामवर सुझावो दिहलन कि ई समस्या कइसे हल हो सकेले। मोट रूप में लोकभासा अकादमी बना के ओकरा भीतर भोजपुरी वगैरह के अलगा-अलगा खाना कइके काम चलि सकेला। ई सुझाव महत्त्वपूर्ण रहे बाकी एकरा अलावे अउरिओ सुझाव आ रास्ता त होसके ! अकेले भोजपुरी वाला रास्तो हो सकेला। सवाल रास्ता के नइखे, सवाल चले वाला के बा।

चलेवाला अपना कठिन करेजा से जहाँ राह ना होले उहाँ राह बना देला। अगुआई करेवाला जहाँ कठिन मोर्चा होला उहाँ डटि के सामना करेला। ओकरा जुआरु आ जीवट भरल कदमन के समय का चूमे के परेला। ईश्वर के ई कृपा रहे कि भोजपुरी भासा का आन्दोलन का शुरूआते में स्व. श्री केदार पाण्डेय का रूप में अइसन एगो जीवट वाला सेनानी मिलि गइल कि रास्ता साफ हो गइल। अब ओह साफ रास्ता पर चलत का बेरी ओह सत्पुरुष के केतना यादि आवति बा ? ('गंगा, जमुना, सरस्वती', से)

देस-विदेस भर में जेतना भोजपुरिया भाई 'प्रोफेसर' आ सरकारी नोकर-चाकर बाड़ें उन करे भीतरघात से एह भासा के बढ़वार थथमथाइल बा। ई लोग माटी के बोली के मुद्दई हवें, जागले रहीं।—सम्पादक

“सब काम भोजपुरी में ना होई”

बहुत साधारण भोजपुरी भाई के कहना बाकि कुल्हि काम भोजपुरी में ही होखे। गलत। भोजपुरी के बढ़ावे के बा त भासा के प्रतिबंध ना चाही। ए खातिर भोजपुरी मारीशस में फ्रैंच, सुरीनाम में डच, ट्रीनिडाड में पीजन इंग० भारत में हिन्दी अंग्रेजी से जुड़ल बा। जरूरी बा कि भोजपुरी में लिखल जाय बोलल जाय बाकि अउर भासा के प्रयोग रोकल ना जाय। आज भी जपनीज, जर्मन संसार के सभी भासा के पुस्तक अपना बोली में अनुवाद कर लेले। अइसे ही कइल जाव।

“भोजपुरी बोलल जरूरी बाकी दबाव से ना”

जहाँ तक भोजपुरी बोले सीखे के बा उ काम जरूर चालू रहे बाकिर केहू के नाते दिल्ली, कलकाता, न्यूयार्क में भोजपुरी नइखे बोल सकत त “छि मानु, छि मानु, छि मानु” नइखे करे के। हाँ इ बात जरूरी बा कि उ नाते भोजपुरी से दूर भागल एगो दोसर बात ह। जे भोजपुरी कवनो कारन से नइखे बोल सकत या बच्चन के नइखे सिखा सकत त ओकारा के देश निकाला नइखे करे के। उनकर समस्या के समझे के कोसिस करे के बा।

“शहर में लोग शहरी अइसन रही”

बहुत लोग चाहेला कि शहर में रहे वाला भोजपुरिया लोग गाँव नियर रहसू। इ ना होई। सम्भव नइखे। अउर जबकि भोजपुरी के मान-मर्यादा ओकरा बोले-वाला के दृष्टि में कम बा।

“पढ़ल खिल लोगन में सुधार के जरूरत”

बड़का लोग पढ़ल-लिखल जब भोजपुरी बोलिहे त साधारण व्यक्ति गरब से आपन बोली बोलिहें। सतीश त्रिपाठी, देवरिया सम्मेलन के एगो बइठक में कहले कि बम्बई में टैक्सी चलावे वाला भोजपुरी में प्रश्न पूछला से जबाव ना देस। सच। एकर दोष पढ़ल-लिखल भोजपुरी में देहला से छोट मान तार्नी जा। अब कुछ लोगन के प्रयास में छोट भाइयन के विश्वास नइखे। बहुत प्रयास कइला पर टैक्सीवाला फेर भोजपुरी में बोलिहें।

केवल छव महीना काम कइला के बाद पंजाब से लौटे वाला एगो बीस बरीस के जवान, सीवान में, भोजपुरी एक दम भुला गइल रहे। हामरा बार-बार भोजपुरी बोलला अउर लजवावला के बाद उ सुद्ध भोजपुरी बोले लागल। जब ओकरा पूरा विश्वास हो गइल कि हम ओकरा के निम्या छोट ना बूझब।

“चन्दा दान”

लइका के जनेव में चाहे लइकी के विआह में हजारो रूपीया के खाली बिजुली जर जाता। बाकी बीस रूपीया के एगो भोजपुरी के पुस्तक नइखे खरीदात। इ कवनो बात ह ?

पन्द्रह करोड़ लोगन के कवनो सुन्दर आ बड़ पत्रिका नइखे। आठ बरिस के प्रकाशन के बाद पाण्डेय कपिल के भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका बरिस ६ मई १९६५ अंक ५० के, सम्पादकीय में एह पत्रिका के प्रकाशन खातिर ७५०/ रूपीया

के अपील निकाले के पड़ल बा। इ दुःख अजर लज्जा के बात बा। बाकी इ नइखे कहल जा सकत कि भोजपुरी में केहु दानवीर नइखे। पइसा ए से नइखे मिलत कि देवेवाला के लेवेवाला पर विश्वास नइखे। एकरा के हटावे के पड़ी।

“भोजपुरी कइसे बढ़ी”

खाली भासा साहित्य के प्रश्न नइखे। प्रश्न बा आर्थिक विकास के भी। आर्थिक विकास से ही साहित्य, भासा समृद्ध होई अवरु भासा साहित्य के वढ़वले से आर्थिक दशा में सुधार होई। एह खातिर जरुरी बा कि, हमनी के राजनैतिक नियंत्रण बढ़ाई जा। जे लोग ओट माँगे आवे ओकर जाति-पाति पूछि के ना छोड़ दिहल जाव। बलुक पुछल जाव कि भोजपुरी लोगन खातिर उ का करिहें। अजर एह बात के Monitor होखे चाहीं कि कइले कि ना।

सरकार के नाम पर बइठल रही आदमी त हमनी के कबहूँ उत्थान ना होई। चन्द्रशेखर जी आ राष्ट्रपति के अब भोजपुरी से जरुरत नइखे। उ लोग जवन चाहत रहे तवन मिली गइल। बाकिर एकर माने इ ना कि बड़का नेता लोग एह यज्ञ में सहायता ना करीहें।

१. साधारण लोग कमर कस के छोट से छोट सहयोग देसू।
२. बड़का लोगन से माँगे के कोसिस जनी कइल जाय। एह लोगन पर pressure राखल जाय। आ एह बात के चेष्टा रहे कि इ लोग छटक ना पावे।
३. बड़का लोग मन से हीनता के भावना निकाल देसु।

४. कवनो काम बड़का लोगन पर इ समझि के ना छोड़ दिहल जाऊ कि इ भोजपुरिया हवन इ त सहायता करवे करीहें। बड़का लोगन के सहायता लेवे खातिर उनका पर pressure डाले के होई जइसे जवन प्रोफेसर या व्यापारी भोजपुरी से सम्बन्ध ना राखत देखाई देसु त उनका के सभा, सम्मेलन में ना पूछल जाऊ। उ लोगन के देखावल जाऊ कि उनका बिना भी भोजपुरी के उत्थान सम्भव बा।

५. भोजपुरी के प्रगति अजर विकास कबनो एगो वर्ग पर नइखे छोड़े के। पढ़ल अवरु कम पढ़ल लिखल सबके सहयोग चाही। एक वर्ग पर छोड़ला से भोजपुरी केनियो ना बढ़िहें।
- क) भोजपुरी बढ़िहे जब की ऐसे रस मिले लागी।
- ख) भोजपुरी के साथ जुड़ला से Status पद के बढंती के अनुभव होखे लागी।
- ग) भोजपुरी के साथ जुड़ला से पइसा-रूपीया मिले के आशा होई, विश्वविद्यालय में कापी जचाई। साहित्य अकेडमी से पारितोषिक इत्यादि। तब बहुत लोग उदार होके भोजपुरी के मतारी भासा कही लोग। कुछ गैर भोजपुरी भी ओ स्थित में भोजपुरी से जुड़े में गौरव समझिहें।

“नेता के लॉटरी से चुनाव”

हर भोजपुरिया नेता होले। उ केहु के नेता माने के जल्दी तइयार ना होखेले। बाकि जब तक एगो प्रमुख नेता ना, चुनाई जे तन-मन-धन से एह काम के आगे

वढ़ावे तब तक भोजपुरी जहें के तहें खड़ा रहिहें। भोजपुरी के साहित्यिक संस्थान अवरु नेतन में मेल नइखे। बाकि जरूरी बा इ कि संस्था के नेतन के एक जगह विटोर कइल जाव अउर लॉटरी द्वारा एगो मुख्य नेता (spokes man) के चुनाव कइल जाव। इ व्यक्ति सबके राय बात से भोजपुरी के उत्थान खातिर सरकार जे मिलस-जुलस।

कवनो काम में पइसा के खर्च बा। कोसिस इ कइल जाव कि नेता स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी में से ही कुछ चुनल जाव। एह लोगन के सरकार I Class या AC के दूगो पास देले। एह लोगन के दिल्ली, लखनऊ, पटना गइल आसान बा। एही लोग के टिकट पर अउर सदस्य भी जा सक तारे। उहँवा जाके आपना जिला के सांसद या एम० ए० ल० के इहाँ निःशुल्क ठहर सके ला लोग। अउर जवन थोड़ा खर्च होई उ कुछ संस्था सब आ कुछ दानवीर लोग दें।

“पइसा कहाँ से कइसे आवे”

एक संस्थान, सरकार या व्यक्ति, से ढेर अपेक्षा ना कइल जाय। काहे कि एक पर आश्रित होखला पर धोखा या निराशा हो सकत बा “चार पाँच के लाठी... एक आदमी के बोझ,” थोड़ा-थोड़ा सहायता मिलल आसान बा।

खास कर हमनी के जब तक सरकार के दान पर आश्रित रहब तब तक भोजपुरी के कवनो उत्थान ना होई। सरकार से दबाव डालीं के ग्रान्ट या एड लिहल जाय। सरकार हमनी पर कवनो दया नइखे करत। हमनी के टैक्स वापस दे रहल

बिया। बाकी सरकार के इहाँ भिक्षुक भा याचक के रूप में गइला पर दुत कारे मिली। “संघे शक्ति जनार्दन”। हमनी एकता के साथ काम करब जा त केहू भी डरि के सहायता करी। “भय बिनु होत न प्रीति”

धन एकत्र करे के कुछ विधि के भी प्रयोग कइल जा सकता बा।

१. खेतिहर किसान—प्रभुनाथ सिंह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन १६६४, मुबारकपुर में, किसानन से आलू गेहूँ चाउर इत्यादि के सहयोग से सम्मेलन के प्रतिनिधियन के खिअवले रहन।

२. बड़का खेतिहर लोग ३. छोट-बड़ व्यापारी ४. अफसर ५. छात्र समूह। बाकि जरूरी बा कि दान देवेवाला के कुछ दिहल जाय। जवन किसान भाई/दोकानदार चन्दा देसू तवना से अधिक से अधिक व्यापार-व्यवहार राखल जाय। वैदनाथ धाम अउर लखनऊ में जवन व्यापारी भोजपुरी पत्रिकन के सहयोग देसू उनका से अधिक से अधिक सामान खरिदल जाय। जे सरकारी अफसर सहायता करसू त उनका बढ़ोतरि खातिर हमनी के नेता लोग से मिली जा। जे राजनैतिक नेता साथ देसू उर्ही के हमनी के ओट दिआऊ।

अभी तक भोजपुरी क्षेत्र के जे लोग आगे बढ़ल बा उ आपना जाति-सम्बन्धी, बल-बूता पर बढ़ल बा। उनका भोजपुरी संगठन या भोजपुरिया भइला से कवनो फायदा नइखे मिलल। एह से भी इ लोग

भोजपुरी के उत्थान में सहायक नइखे होखे चाहत।

जरूरी ए बात के बा कि एह काम के संस्था या व्यक्तिगत रूप से भी कइके दिखावल जाय कि भोजपुरी से ना जोड़ला रहला से ओ लोग के बढ़न्ति ना होई—उनकर छति होई। किसान के उधार

१. “इ लेख अखिल भारतीय भोजपुरी संगठन, नई दिल्ली के ‘पुरुवैया’ नामक डाइजेस्ट, सम्पादक श्री पाण्डेय आशुतोष खातिर तइयार कइल बा।”
२. लेखक का जन्म जुलाई १०, १९३६ ई० में बलिया जिला के सोनबरसा ग्राम में गइल। प्रयाग विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० कइके अमेरिका के इण्डियाना विश्वविद्यालय से पुनः पी०एच०डी० प्राप्त कर तीस बरिस तक अमेरिका में पढ़ावे और व्यापार के कार्य करत भारतीय अउर भोजपुरी लोक साहित्य पर इंगलैण्ड, पेरु, हंगरी, जापान, कनाडा, फिनलैण्ड, बेनेजुएला, अमेरिका अउर भारत

ना मिली, अफसर के बढ़न्ति ठीक से ना होई इत्यादि। तबे लोग भोजपुरी के सहायता करीहें। हमरा अनुभव बा कि लोग सोचत बाटे जब हमरा भोजपुरी से कवनो फायदा नइखे, त काहे के हम सहायता करीं? इ भावना हृदय के सच्चाई अवरु कठोर मेहनत द्वारा बदले के बा।

के लब्ध प्रतिष्ठ शोध पत्रिकन (जरनल्स) में लेख छपल। एकरा अलावे भोजपुरी के ऊपर छव गो पुस्तक छप चुकल बा। एहधरी भोजपुरी लोक साहित्य के संग्रह, प्रकाशन अवरु उत्थान कार्य में सलग्न। ए लेख में सहायता खातिर श्री अरुण कुमार गिरि के बहुत—बहुत धन्यवाद।

(साइत परलोक गइले के साल भर पहिले मीत हरिशंकर जी के इ लेख हमरा मिलल रहे। हमनी ‘सम्पादकीय’ के जगही उहाँ के ई लेख के छाप के श्रद्धांजलि देत बानी—सम्पादक)

गन्ना-किसान के तरक्की अउर उनके

जीवन में मिठास भरे के खातिर हमरा के इयाद करी

एच० एम० पी० सुगर्स लिमिटेड
बगहा
पश्चिम चम्पारण

खनकि उठै कँगना

हरिराम द्विवेदी

अजमतगढ़ पैलेस, मोतीझील
वाराणसी—२२१०१०

गीत

कुमार विरल

भोजपुरी विमाग

श्यामनंदनसहाय महाविद्यालय

मुजफ्फरपुर (बिहार)

काजनि काहे खनकि उठै कँगना !

मनवाँ हुलसल जियरवा जुड़इलै,

कागा सगुन—सनेसवा लियलिलै,

नैनन नाचै सुधर सुख—सपना !!

काजनि काहे खनकि उठै कँगना !!

उमड़लि आवै सनेहिया कै नदिया,

छम छम नाचैले लहुरी ननदिया,

बाजै पयलिया झमकि उठै अँगना !!

काजनि काहे खनकि उठै कँगना !!

महकै लागल पिरितिया कै बिरवा,

चम चम चमकै हिये सोन किरवा,

अस मन होला पहिर लेहीं गहना !!

काजनि काहे खनकि उठै कँगना !!

तुलसी चउरा दियनवाँ जरइबै,

जोरि अँचरवा सगुनवाँ जगइबै,

आजु ते पूरन भइल मोर मँगना !!

काजनि काहे खनकि उठै कँगना !!

पुरुवैया (भोजपुरी डाइजेरट)

के प्रवेशांक खातिर

हमार शुभकामना !

रेमी पारकल

अध्यक्ष

सोसल वेलफेर सोसायटी
रामनगर, पश्चिमी घम्पारण

गीत

कहाँ बोई बिअना आ नेह से पटाई !
मन माटी ऊसर बा कइसे जमाई !!

अँखिया से जोती ले रूपवा के धरती !

कहिया से भाग मोरा असहीं बा परती !!

सुनुगत सनेहिया के कइसे बुताई !!

अदबदा के अँखुआइल पीड़ा के विरवा !

देहिया के रेती पर सिह के ना पुरवा !!

माया—मचान झूठ कउआ उडाई !!

चूना से टीकल तन पतुकी करीखाहा !

पुतला पुअरा के खाड़ जिनिगी रखवाहा !!

आत्मा अनेरिया के कहवाँ बेलाई !!

चरन धूरि गइला से चान बा लेटाइल !

सपना के हाँसिल कबो ना गोटाइल !

कइसे आकाश बीच शब्द के उगाई !!

॥ ॥ ॥

गीत

आश नारायण प्र.'अशोक'

रेशमकोठी, वीरगंज (नेपाल)

जरे लागल बियवा, टूटे लागल हियवा,
होखे लागल अइसन भोर !

रे बदरा ! बन गइले पपिया कठोर !!

गदरल उमिरिया, अगोरे सारी रतिया,
देहिया देला रे झकझोर !

रे बदरा ! कइसे उठी डोलिया रे मोर !!

छोड कइल सोरवा, बरस घनघोरवा,
कहवाँ भुलइलें चितचोर !

रे बदरा ! नाचे लागल मनवा में मोर !!

हुलस जाय अंखिया, जुड़ा जाय छतिया,
अन धन होखे रे पुरजोर !

रे बदरा ! उड़े लागल अंचरा के छोर !!

दू गीत

डॉ. विश्वरंजन

भगवान बाजार, छपरा

रात के अन्हरिया में सूझे ना डगरिया,
कुछु ना बुझाये ओर-छोर !!
एही से देहरिया पर दियना जराइले,
करीले अन्हार में अँजोर !!
आँख में आकाश भर देखे सभे रोशनी,
आँख में आकाश भर अन्हार हरा जायेला !!
अपने डरेर खींच घेरे सभे अपने के,
अपने से सभे बा लाचार जिया जायेला !!
रोये चाहे हँसे मन दूनो छलक जाय,
ढरके पपनिया से लोर !!
इचको ना हार हेकू माने दम्भ भारी,
न्याय अन्याय दूनो एके बा लडाई में !!
दुख देले आदमी, जहवाँ दुख ले ले आदमी,
हम के अहम् जहवाँ जिनगी बा खाई में !!
मान अपमान दूनो मन के भरमवां हवे,
रचना में रस सराबोर !!



सुख के अँखुआइल छन टोहे पाँखी मन !
चोच में दबवले चुप एगो धुन नाम !!

कवनो अंगना चुन ले दाना भा तिनका !
बरखा-बुन्नी में ऊ डाढ़ि पर गङ्गिनका !!
नेह के बना लेवे खोंता सुख धाम !
चोंच में दबवले चुप एगो धुन नाम !!
जमल बझठ भीती पर परत उबासी के
सुलह के दरारन में फँसल निकासी के
छाजन भर के उड़ान में. उमिर तमाम !
चोंच में दबवले चुप एगो धुन नाम !!

ज़िरियन से साँस के स्वर सुरसुरायेला !
दिन सोनहुला छितिज पर जब भुरभुरायेला !!
पाँख सँगे डगरे तब सुरुज भोर शाम !
चोंच में दबवले चुप एगो धुन नाम !!



गीत

काशीनाथ सिंह

द्वारा—सी.पी. स्टोर

बुधबारी बाजार—४६५००९

बिलासपुर (म.प्र.)

जब से रुठल बलमा, सेनुरवा रुठ गइलबा।
करी कतनों सिंगार
सेनुरवा रुठि गइलबा
अँखिअन से गीरे लोर, दरपनवा रुठि गइलबा।
धवल चनरमा, आजु
करिआ बदरी में घेराइलबा
लिलरा के बिंदिआ पर, गरहन लागि आइलबा ॥
बाटे नाहिं सुधि तन
मन अकुलाइल बा
केकरा से पूँछीं कवना खोंता में लुकाइलबा ॥
सगरे उमरिआ में
पसरल अन्हरिया बा
चितवा के चतुर चोर, कवना माया में हेराइलबा ।



माई वन्दना

वाहिद अली वाहिद

साहित्यांगन

६/४३७, विकास नगर, लखनऊ
जेठ घमवा में पुरुवा बयार माई,
बलुरेवता में नदिया के धार माई ।
तोरा अँचरा त ममता के सागर हवे,
तोरे अँखिया से छलके दुलार माई ॥
तू ही अँगना, ओसरवा, दुआर माई
तू ही धरती केहऊ अवतार माई ।
गीत सुमन चढ़ाई तोरे चरनन में,
तनि कविता के हमरे सुधार माई ॥
भर मनवा में तनि उजियार माई,
भागे अँगना से सगरो अन्हार माई ।
जाति, धरम के भैंवर झूबेला देशवा,
तनि एकता के दे दे पतवार माई ॥



नवगीत

डॉ० तैयब हुसेन पीडित

हिन्दी विभाग, जेड ए, इस्लामिया कॉलेज
सीवान-८४१२२६ (बिहार)

का खाई? का घर लेजाई? का जाई परदेस!
खूँटा में मोर दाल पड़ल बा, राजा कन बा केस!!
एही दाल ला नाक कान कटवाली माई मोर,
भक्सी में झोंकवावल गइली कह—कह के मुँहजोर,
सुख रगुनी चिरई का पाछे, दनवा—दैँडित कलेस!
खूँटा में मोर दाल पड़ल बा, राजा कन बा केस!!

तप में माथ कटल, पढ़गित में अँगूठा दान भइल,
ले—देके पहचान अपन अज्ञाते वास गइल,
रामराज से महभारत ले हमरे भइल उदेस !
खूँटा में मोर दाल पड़ल बा, राजा कन बा केस !!

मियां नवाब के लग्हर छूरी हगरे गाज गिरल,
बचवा रट्ट रहल 'बकटेंव—टेंव' खोंता ले छितरल,
ई जाँता हर जगह घात में धइले मानुष—भेष !
खूँटा में मोर दाल पड़ल बा, राजा कन बा केस !!

गिरगिटिया मन पंछी बनके भागे सहर—सहर
असम, बंगाला, काशीर दिल्ली आ अमृतसर
भोपाली मउअत लेले सब ओर खड़ा बा देस !
खूँटा में मोर दाल पड़ल बा, राजा कन बा केस !!

एक दाल उनका खातिर बा तूती के आवज
हमरा खातिर इहे काल्ह, बिहने आ बीतत आज
हार ना मानब, मिली केहू नूँ खिस्सा होई सेस !
खूँटा में मोर दाल पड़ल बा, राजा कन बा केस !!



भोजपुरी में बोली, आ भोजपुरिये
में लिखीं। एह भासा के बोले वाला
संसार में तेइस करोड़ लोग बा।
—सम्पादक

मनवा चिहाइल

डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल'
वीमेंस कॉलेज
जमशेदपुर-८३१००९
बिहार

दक्खिन से आवत हउवा कुंअरकी
गतर गतर दगरा जाला !
लहर लहरि उठे झीलवा में जइसे
नवकी धियवा अगरा जाला !!

कुंजन के लिलरा पर शबनम के बिंदिया
देखि देखि कोइलर चिहाई !!
अगिली किरिनियाँ पहाड़ी पर पहुँचल
पियरी आँचर फहराई !!
कइसे बताई कतना उठल बा
मन के समुन्दर हिलोर !
मैदानी मनवा हमरो चिहाइल
कि आइल पहाड़िन पर भोर !! ◆

राष्ट्रपिता के धरती
चम्पारण के
सजाई, संवारी अजर
हमरा के
शान्ति से जीये दीं



सीमेंट, छड़ अजर भवन प्रसाधन विक्रेता
मे० के० के० ट्रेडर्स
रामनगर, प० चम्पारण

भोजपुरी लोक संस्कृति आ कृषि-संस्कृति

साहित्य वाचस्पति गणेश चौबे

ग्रा. पो. बंगरी

पियराकोठी, पूर्वी चंपारन (बिहार)

कवनो देश आ जाति का विचार आ कर्म, आदर्श आ व्यवहार का क्षेत्र में जे ओकर प्रगति आ प्राप्ति बाँटे, ऊ ओकर संस्कृति हवे। एकरा भीतर परंपरा से आइल विश्वास, पूजा-पर्व त्यौहार रसम-रेवाज, रहन-सहन, पहनावा, गीत, नाच, खेल, नाटक, कला-कौशल आ जीनगी बितावे के तौर-तरीका सामिल बाटे। (देब-पितर), भूत-प्रेत, आत्मा-परमात्मा, जनम-मरन का संबंध में जवन विचार बाटे, ऊ सब संस्कृति का भीतर आवेला ! एह तरह से संस्कृति का क्षेत्र के बहुत बड़हन विस्तार बाटे।

संस्कृति के दू भाग में बाँटल जा सकेला। एगो त शिष्ट संस्कृति ह, जे ओइसन पढ़ल-लिखल लोग के संस्कृति ह जे बुद्धि आ विकास का चोटी पर पहुँच गइल बाटे। दोसर लोक-संस्कृति बाटे, जवन निपढ़ भा बहुत कम पढ़ल साधारन जनता के संस्कृति ह। अइसन लोग आजो अपना पुराना विचार, विश्वास आ तौर-तरीका में जकड़ल बाटे। ऊ बुद्धि आ विकास का नीचला स्तर पर बाटे। लेकिन एह दूनू तरह का संस्कृतियन का बीच कवनो स्पष्ट विभाजन-रेखा नइखे। हरेक देश के अपन राष्ट्रीय संस्कृति रहेला, जे समूचा देश में बेयापल रहेला। एकरा अलावे हरेक प्रान्त भा भाषाई क्षेत्र के अपन कुछ अलग-अलग संस्कृति रहेला, जे उहा का जमीन का धरातल, जलवायु आ

प्राकृतिक स्थिति से प्रभावित रहेला। एह संस्कृति में स्थानीय रंगत रहेला ई प्रान्तीय जनपदीय भा क्षेत्रीय संस्कृति कहाला। एह दृष्टि से भोजपुरी बोले वाला क्षेत्र के एगो अलगे लोक संस्कृति बाटे।

भोजपुरी क्षेत्र के धरातल समतल बाटे। इहाँ के जमीन बराबर बाटे, जे खेती का उपयुक्त बाटे। इहाँ के जलवायु समरस बाटे, जवना वजह, से इहाँ के निवासी देह से बलिष्ठ आ हट्टा-कट्ट होखेले। एह क्षेत्र के गंगा, सोन, गंडक सरजुग, घाघरा आदि नदी सिंचत रहेली, जवना से खेती में सुभिता होखेला। लेकिन जब एह नदियन में कस के बाढ़ आ जाला, तब खेत के फसिल दह जाला। एह क्षेत्र में चीनी मिल छोड़ के दोसर कवनो कल-कारखाना नइखे, जवना में इहाँ का जनता का काम-धंधा करके अवसर मिल सके। एह परिस्थिति में इहाँ के अधिकाँश लोग का इया त खेतिये पर निर्भर करे परेला, भा कही बाहर जाके फौज आ पुलिस चाहे दरवान के काम करके परेला। एही परिस्थिति में इहाँ का आदमियन का मौरिशस, फीजी, ट्रिनीडाड, गुवाना, आ सूरनाम आदि देशन में गिरमिटिया मजदूर बनके जाये के परल, जहाँ ई लोग बंजर जमीन के अपना बल-बूता पर आबाद करके ओकरा में सोना उपजावे का जोग बना देलस। एह सब बातन पर गौर कइला से ई स्पष्ट हो

जाला कि भोजपुरी लोक संस्कृति बल-पौरुष, साहस-जीवट, परिश्रम आ प्रगतिशीलता पर आधारित बाटे।

भोजपुरी क्षेत्र में खेती के बहुत महत्व दिल्ली जाला। इहाँ एगो कहाउत प्रचलित बाटे—“उत्तिम खेती, मद्धिम बान। निसिध चाकरी, भीख निदान।” एह क्षेत्र के, अनेक प्रथा आ पर्व-त्यौहार खेती से संबंध राखत बाटे। अगहन का महीना में धान, तील, उरिद आदि कट जाला। पूस महीना बीतला पर मकर संक्रान्ति होला। जहिया से मकर संक्रान्ति आरंभ हो जाला ओह दिन नया धान के चीउरा, दही, तील के बनल मिठाई तिलवा, नया हरिहर, उरिद के दाल नया चाउर के बनल खिंचड़ी खाइल जाला। बसंत पंचमी का दिन हरेक फार, कोदार, खुरपी आदि खेती के औजार के खेतिहर लोहार से पिटवावेला, एकरा बदला में ओकरा के अनाज दियाला। फेनु हरवत भा खेतिहर परती जमीन में पाँच मोर हर चलादेला, हर का टोर पर अछत आ जल चढ़ावेला। एह दिन से अगिला साल का खेती लागि हर से जोत शुरू हो जाला। होरी का अवसर पर ‘होलिका दहन’ होला जवना के ‘संवत जरावल’ कहल जाला। ‘होलिका दहन’ का आग में रहर के अउर जौ के बाल सेंकल जाला ओकरा के खाइल जाला। मकर संक्रान्ति का पहिला दिन के जौ के सतुआ आ आम का टिकोरा के चटनी खाइल जाला। एकरा के ‘सतुआन’ कहल जाला। एह तरह से तिलवा संक्रान्ति, होरी, आ सतुआन नया

भोजपुरिया भाई ! जाग, जाग ! तोहरा घर में मत धरे आग !!
 ‘राहुल’ के माटी के बोली ! ई ‘कबिरा’ का घर के चिराग !!—पाण्डेय ‘आशुतोष’

अन्न के भोजन करे के त्यौहार ह। जवना दिन खेत में पहिले—पहिल धान के बावग होखेला भा रोपनी लागी खेत में बीज डाल के मूठ लागवल जाला ओह दिन ओह खेत में अक्षत, दही, फूल आ पानी डार के धरती के प्रणाम कइल जाला। जवना दिन के आसाढ़ का महिना में पनीलागि प्रथम—प्रथम ‘बीया’ उखाइल जाला ओह समय के गीत गावल जाला। जवना में ई कहल गइल बाटे कि ब्रह्मा, विसुन आ महादेवो धान के खेती करेलें। जहिया रोपनी खतम होखेला ओह दिन मजदूर आपस में कादो छीट के खुशी मनावेले हमनी ओह दिन के कादो परवार’ कहीले। आसिन का अँजोर पक्ष में परिवा का दिन कलस-स्थापन का समय उहाँ माटी राख के जौ के बीज डार के ‘जयी’ गिरावल जाला। रबी का खेती का समयो में मूठ लागेला। सामा-चकवा लड़कियन के एगो खेल ह, जवना में श्यामा, चकवा आ खिडरिच चिरई के माटी के मूरत रहेला। एकरो गीत में ‘डीभी’ चरावे के चरचा आ इल बाटे। कातिक सुदी परिवा के मवेशियन के नया रंगीन पगहा लगावल जाला, ओकरा के पखेव दिल्ली जाला, जवना में कूटल-पीसल जड़ी-बूटी रहेला। ई सब खेतिहर के त्यौहार ह जवना का खेती आ ओकर पैदावार से सीधा संबंध बाटे।

अंत में हमरा कहे के ईह बाटे कि भोजपुरी लोक संस्कृति मुख्यतः कृषि-संस्कृति ह। □

भोजपुरी के समर्पित कवि 'श्याम'

कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

भाटपाररानी, देवरिया, उ.प्र.

मझे शारदा भवानी के मन्दिर में फूल चढ़ावे वाला भगत लोग त करोड़न में बाने बाकिर ओही में ऐसे भोजपुरी के साधक कवि स्वर्गीय दूधनाथ शर्मा 'श्याम' जी इनल गिनल लोगन में से रहले। इनकर जनम उत्तर प्रदेश की पूर्वी छोर पर बसल जिला देउरिया के नामी गाँव पिण्डी में ११ नवम्बर १९७५ ई. में भइल रहे। पाठशाला के पढ़ाई कम्मे भइल। सब जिनिगिए सरस्वती की साधना में लागि गइल। सुराजी—संग्रामी—कवि श्याम गाँधी जी के आवाज पर आजादी के लड़ाई में कलम सहिते कूदि गइले जवना से कई बेर जेलो गइले। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भइले आ कवि कर्म में जिनिगी खपादिहले। ऐही सेवा खातिर कई संस्था इनिके साहित्यिक सम्मान कइली सनि जवना में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना के बड़हन भूमिका बा। देवरिया जिला भोजपुरी परिषद के आजीवन अध्यक्ष रहले। गाँवन की पगड़ण्डी से लगायत शहर की सड़क तक अपनी दौड़ के अनुभव के सहज अभिव्यक्ति भोजपुरी कविता में ई कइले बाने अध्यात्म, राजनीति, समाज, धर्माधर्म से लेके ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थ, सन्यास सगरी इनिकी रचना के विषयवस्तु रहल। श्रद्धांजलि, ग्रामगाथा, पत्रपुष्ट, सुदामा यात्रा, पद्यावली भजन, सुभाष रणस्थली हिमगिरि के नेवता, कचराकूट (महाकाव्य) राम सरोवर, लहालोट, बाबा राघव दास (प्रबन्ध काव्य), कृषि काव्य, बंगयुद्ध, बजरंग बली, संतों की झाँकी, उघटा—पुराण, द्रोपदी (प्रबन्ध काव्य) इंदिरागांधी, देवराहा बावनी, श्रीराम जन्मभूमि, केशव—बावनी महन्त दिग्विजयनाथ (प्रबन्ध काव्य) के रचवइया

कविवर 'श्याम' जवना कवि—सम्मेलन में ना पहुँचि पइहें ऊ मंच मसान अइसन सुनसान हो जात रहल है आ जहाँ पहुँचि जइहें तहाँ श्रोता लोग आपन बत्तीसो दाँत देखा के ठठाके हँसत—हँसत लगभग नौ महीना एतहत पेट फुलालेत रहल ह लोग। माइक पर बोलावे बदे उनके बारे में इहे मंत्तर पढ़ात रहल है—“यू.पी. की सब भोजपुरी कवियन के बप्पा। हास्य व्यंग के हवें मोहनजोदड़ो हडप्पा॥। घर पुर-पिण्डी जेकर हउवे बलिया तप्पा। भोजन करते लागि जाय इज्जति पर धप्पा॥। जेकर कविता सूनिके, हँसत हँसत जिउ जाय। कविवर गुरुवर श्याम जी धढ़ी मंच पर धाय॥।”

ई श्लोक सुनते उहाँका कविता सुनावल सुरु कइदेत रहली है। १ जुलाई १९६३ में सरग की कवि सम्मेलन खातिर भगवान अनुके उठाले गइले। देउरिया से दिल्ली ले आ बम्बई से बंगाल आसाम तक ले उनकी रचना के धूम मचल रहल। जबले जियले तबले सरस्वती मझ्या के गुदरी सियले। ऊ आजु धरती पर नइखें बाकिर अनुकर कविता धरती के आजुओं सिंगार करत बा॥।” अउर “जयन्ति ले सुकृतिनः रस सिद्धाः कवीश्वराः। नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं भयं॥।” कवि कविता के रचे बनावे। ओकर रस संसार उठावे।

कवि के कविता मरे न कब्बो।

रहले तब्बो, गइले तब्बो॥।

देश में भोजपुरी विदेश में भोजपुरी बा। जहाँ जहाँ गइला पर रउरा मिले भोज में पूरी। निर्मय होके रउरा ओके कहीं क्षेत्र भोजपुरी। 'श्याम' जी के नामें मृत्युलोक से हमनीका श्रद्धांजलि भेजि रहल बानी।

भोजपुरी के समर्पित कवि 'श्याम'

कुबेरनाथ मिश्र 'बिचित्र'

भाटपारानी, देवरिया, उ.प्र.

महिया शारदा भवानी के मन्दिर में फूल चढ़ावे वाला भगत लोग त करोड़न में बाने बाकिर ओही में एगो भोजपुरी के साधक कवि स्वर्गीय दूधनाथ शर्मा 'श्याम' जी इनल गिनल लोगन में से रहलें। इनकर जनम उत्तर प्रदेश की पूर्वी छोर पर बसल जिला देउरिया के नामी गाँव पिण्डी में ११ नवम्बर १९७५ ई. में भइल रहे। पाठशाला के पढ़ाई कम्से भइल। सब जिनिगिए सरस्वती की साधना में लागि गइल। सुराजी—संग्रामी—कवि श्याम गाँधी जी के आवाज पर आजादी के लड़ाई में कलम सहिते कूदि गइलें जवना से कई बेर जेलो गइलें। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भइलें आ कवि कर्म में जिनिगी खपादिहलें। एही सेवा खातिर कई संस्था इनिके साहित्यिक सम्मान कइली सनि जवना में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना के बड़हन भूमिका बा। देवरिया जिला भोजपुरी परिषद के आजीवन अध्यक्ष रहलें। गाँवन की पगडण्डी से लगायत शहर की सड़क तक अपनी दौड़ के अनुभव के सहज अभिव्यक्ति भोजपुरी कविता में ई कइले बाने अध्यात्म, राजनीति, समाज, धर्माधर्म से लेके ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थ, सन्यास सगरी इनिकी रचना के विषयवस्तु रहल। श्रद्धांजलि, ग्रामगाथा, पत्रपुष्प, सुदामा यात्रा, पद्यावली भजन, सुभाष रणस्थली हिमगिरि के नेवता, कचराकूट (महाकाव्य) राम सरोवर, लहालोट, बाबा राघव दास (प्रबन्ध काव्य), कृषि काव्य, बंगयुद्ध, बजरंग बली, संतों की झाँकी, उघटा—पुराण, द्रोपदी (प्रबन्ध काव्य) इंदिरागांधी, देवराहा बावनी, श्रीराम जन्मभूमि, केशव—बावनी महन्त दिग्विजयनाथ (प्रबन्ध काव्य) के रचवइया

कविवर 'श्याम' जवना कवि—सम्मेलन में ना पहुँचि पइहें ऊ मंच मसान अइसन सुनसान हो जात रहल हइ आ जहाँ पहुँचि जइहें तहाँ श्रोता लोग आपन बत्तीसो दाँत देखा के ठठाके हँसत—हँसत लगभग नौ महीना एतहत पेट फुलालेत रहल ह लोग। माइक पर बोलावे बदे उनके बारे में इहे मंत्तर पढ़ात रहल हइ—“यू.पी. की सब भोजपुरी कवियन के बप्पा। हास्य व्यंग के हवें मोहनजोदडो हडप्पा॥। घर पुर-पिण्डी जेकर हउवे बलिया तप्पा॥। भोजन करते लागि जाय इज्जति पर धप्पा॥। जेकर कविता सूनिके, हँसत हँसत जिउ जाय। कविवर गुरुवर श्याम जी घढ़ी मंच पर धाय॥॥”

ई श्लोक सुनते उहाँका कविता सुनावल सुरु कइदेत रहलीं हइ। १ जुलाई १९६३ में सरग की कवि सम्मेलन खातिर भगवान अनुके उठाले गइले। देउरिया से दिल्ली ले आ बम्बई से बंगाल आसाम तक ले उनकी रचना के धूम मचल रहल। जबले जियलें तबले सरस्वती महिया के गुदरी सियलें। ऊ आजु धरती पर नइखें बाकिर अनुकर कविता धरती के आजुओं सिंगार करत बा॥।” अउर “जयन्ति ले सुकृतिनः रस सिद्धाः कवीश्वराः। नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं भयं॥” कवि कविता के रचे बनावे। ओकर रस संसार उठावे।

कवि के कविता मरे न कब्बो।

रहलें तब्बो, गइलें तब्बो॥।

देश में भोजपुरी विदेश में भोजपुरी बा। जहाँ जहाँ गइला पर रउरा मिले भोज में पूरी। निर्भय होके रउरा ओके कही क्षेत्र भोजपुरी। 'श्याम' जी के नामें मृत्युलोक से हमनीका श्रद्धांजलि भेजि रहल बानी।

पत्नी मनोरमा देहि

आचार्य प्रतापादित्य

अरविन्द आवास

बैतियाहाता, गोरखपुर-२७३००१

भिनहिंयैं भिनहिंयैं खाये कै मन कै गइल। से, पंडिताइनि जब सुक्खे चाय गिलासी में ले आके धइलिनि त मुँह से निकरि गइलि—का हो पंडिताइनि झूरै झूरै चाय, खलियै पेट—पेटे में आगि बरि जालाऽ। तनी कब्बो बरी—बरा फुलउरी भी बना दिहल करऽ। पंडिताइनि अपने मन से त भाँति भाँति कै पकवान बना के ठूँसि ठूँसि खिया दिहैं, बाकी, 'कहले धोबी गदहा पर नाहीं चढ़त' से जो कुच्छू कहि परै त अइसन अररालिनि कि कान फाटि जाय। जो हमरे भगवान सौ पिति घोंटे कै समरथ न दिहले होतैं आ हमरन के घरम में मुसल्मानन जस तलाक कै चलन होत त बियहवैं में तलाक हो गइल होत। बाकी नीक बाति ई कि पंडिताइनि जेतनै जीभी कै करू ओतनै मन कै मीठ हइन। बदरन जस गरजि के जो बरसिहैं त जइसै सेवाती नच्छत्तर कै पानी, जवन सीपी में पैर त मोती आ बाँसे में परै त बंसलोचन बनि जाय। अबकै ज्ञानी लोग तै कहैलं कि ई बाति सही नाहीं हवै बाकी शास्त्र वेद में लिखल बा ई सुनल त जरूर हवै। से, सेवाती से मोती आ बंसलोचन बनत होखै चाहै नाहीं बाकी गरजले के बाद जब पंडिताइनि बरसि देलिनि त एह बुढ़ओ कै करेजा हरियर हो जाला, लेकिन बुढ़उती में हमहूँ तनी खरखर होत जात बानीं, से अब कब्बो कब्बो भिड़त भी हो जाता। त, हमरे आजु के कहले परे पंडिताइनि बोलि परलिनि,—'हं, हंए, कहबैं काहें नाहीं।

कब्बो सूखा त कब्बो दाहा। अनाज पानी होई नाहीं आ जजिमानियों हो गइलि पातर। न घर में एकको दाना उरुद बा न बेसन। अरे, अब तै केरझ्यो मिलल हो गइल बा मुस्किल काहें कि सब केराव 'मटर' हो गइलिनि आ फुलउड़ी पकउड़ी के साथे छोला बटोरा खा खा पंच अडंड हा जात बाड़न—दुकानी कै सवाद कहीं घर में त मिलत नाहीं। आ, रउरे घरे जबसे अइलीं तब से 'हंडिया कि तेरी खपरिया की मेरी' करत करत, पेवना लगावत लगावत, करिहाँव झुकि गइल बाकी सांस नाहीं मिलल। लइके फइके जवान भइलैं त आपन आपन मेहरी लेके परदेस बसि गइलैं—अब इहै सूखल हाड़ बा इहै पसाई आ। हमहूँ तेजा गइलीं, कहीं 'बस करऽ बस, बहुत हो गइल। अरे जबाना बदलि गइल, राज—रियासत खतम हो गइल त जजिमानियों मद्दिम परि गइल। नाहीं त, जब बिआह भइल रहल त एही खेती बारी से सरसों बेंचि के बाबा हाथी खरिदले रहलैं आ परयाग जी में दान दे दिहले रहलैं। पचासन विद्यार्थिन के संस्कृत पढावत रहलैं आ भोजन पानी कै भी व्यवस्था करत रहलैं...' पंडिताइनि कहलिनि 'रउरहूँ बस करीं। इहै कुल्ही सुनत सुनत कान पाकि गइल। रउरे कमाई से त, लुग्गो कपड़ा चलल बा मुस्किल। खपड़ा जो टूटउला त सोझ नाहीं होला। अरे मनबोध काका कै छन्हियो लिंटर हो गइल, बाकी रउरे घर

कै कोना, जवन खहराइल तवन, सोझ नाहीं भइल। आ हमके का देब, एक चउबन्नी, एक जोड़ा धोती में अपनहुँ सालि काटि देई ले आ खड़ाऊँ घिसि के एडी जमीन परे घसीटत बानी... खड़ाऊँ तक खरिदले कै बेवत नाहीं, आ चलल बानी... हमहुँ आजु सोचि लिहले रहलीं कि जबाब देब पुरहर चाहै दुपहरिया उपासै में बीतै। हम कहली—‘अरे मनबोध काका त हवैं सरकारी मेहमान, उनकै तै सरकारै हवै जजिमान, कर्ज उनके फ्री, घर बनावे कै दामकाम, रोजी रोजगार करे खातिर उनके बिना सूद कै उधार—नौकरी में उनके कुल्ही सुविधा। से, उनकर कवन बरोबरी। अरे, अपने जाति बिरादरी कै हालि देखइ तब न पता लागी। लायक आ कमासुत बेटा पतोह भगवान दे दिहलैं जवने से मुँह अजोर हो गइल—अरे, हमरे कामे से न आवैं त एसे का— एतना नाँ, गाँव, घरे-घरे उनके बढ़ोतरी कै चर्चा सुनि के जिउ नाहीं जुडाला का ?’ पंडिताइनि कहलिनि, ‘अरे उहो कवनो राउर करनी थोरै रहल। धन्नि मनाई कि हमरे जस मेहरी पवलीं कि आपन हाड़ मांसु पसा के, जेवर—बिक्खो बान्हे राखि के, डाँटि गाँसि के, लइकन के एह लायक बना दिहलीं—रउरे त इहो जाने कै जूनि बेला नाहीं मिलत रहल कि लइके कवने मदरसा में कवने किलासे में पढ़ैलैं।’ पंडिताइनि के भगवान मोछि त दिहलैं नाहीं बाकी जो मोछि रहल होत त जरुर ई कहि के अङ्ठले होतिन। हमतै आपन मोछि एही नाते छाँटि छूँटि के छोट कइले रहीले। काहें कि अब मोछी कै जुग जमाना नाहीं बा। बाकी बिआहे के पहिले

दुर्गा जी कै सम्पुट करत रहलीं कि ‘पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणी, तारिणी दुर्ग संसार सागरस्य कुलोदभवाम’। से रउरही पांचन तय करीं कि हमार ई माँगन पूरा भइल कि नाहीं बाकी हम तै एह नउमी के दुर्गापाठ बाँचल बन्न त करी देब काहें कि हमरे जान न तै एह सम्पुट के लाभ मिलल न ‘रूपदेहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि’ कै लाभ मिलल। काहें कि घुरहू कतवारू भी हमार मेंड काटि के अपने खेत में मिला लेत बाड़न आ सुखराज त बगङ्घा त सरकार नवका कानून में चलान करा देई, से कान पोंछि—लरका के सब कुछ सहे के बा चाहे घर में चाहे बाहर। +

**आदिम जुग से बीसवीं सदी तक
पहिरावा के बदलत रहल रूप**

**आधुनिक परिधान,
उत्तम आवरण
मनमोहक लिबास
सिल्क, सूती, बनारसी
साड़ी, रेसमी कपड़ा**

**आ हथकरघा के कपड़ा खातिर
हमरा इहां पधारी।**

**मे० ईश्वरी प्रसाद,
अरुण कुमार
रामनगर, प० चम्परण (बिहार)**

भोजपुरी कविता के भीष्म पितामह— श्री धरीछन मिसिर

ज्योतिशंकर पाण्डेय

ग्राम—लालीपार

पो. दुमरीस्वाँगीपट्टी

जनपद—पड़रौना—२७४२०६

भोजपुरी के समरथ व्यंगकार, कविता के भीष्म पितामह श्री धरीक्षण मिसिर जी के जनम चइत रामनवमी सम्बत् १६६२ बिक्रमी के पूरबी उत्तर-प्रदेश के सुदूर पूरुष बसल गाँव बरियार में भइल रहे। मिसिर जी के बाबू जी के नाँव स्व. जगदेव मिसिर आ माई के नाँव स्व. फूलमती देवी जी रहल। इहाँ के विआह देवराजी देवी जी से भइल रहे जे अब गुजर गइल बानी। मिसिर जी के एके लइका श्री मिसिर जी भइली जेकरे जरी से तीन जने नाती बा सब। जेठकू श्री कैलास नाथ मिसिर हँई जे इंटर कालेज तरया सुजान में अंगरेजी के प्रवक्ता बानी, मझिलू श्री अमरनाथ मिसिज जी खेती—गिरहन्ती कराइलें, सबसे छोटकू श्री दिनेस मिसिर जी पी.ए.सी. में बाढ़ी। इहाँ सबके जरी से मिसिर जी का ए बेराले सात जने पनाती आ दू जने सनाती बाड़न। ये तरे मिसिर जी के पलिवार फरत—फुलात बढ़त बा।

श्री धरीक्षण मिसिर जी के प्रारम्भिक शिक्षा तमकुही से शुरू भइल। पड़रौना से मिडिल सेकेण्ड डिविजन पास कइलीं अउर श्री जयनरायन हाई स्कूल बनारस से हाई स्कूल सेकण्ड डिविजन में पास कइलीं। पास कइला बाद घरे आ गइलीं अउर तमकुही संस्कृत पाठशाला में प्रथमा के नाँव लिखा लिहलीं बाकिर बाबू जी के मर गइला पर स्वाध्याय अउर गिरहस्ती में

रम गइलीं। तमकुही राजा साहब श्री इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही के दरबारों में आवे—जाये लगलीं। ओहिजू के प्रेरना से कवितो करे सुनावे लगलीं। इहे जिनगी के धार बनि गल अउर अबाध गति से चलत रहल पर आजु पुरनियाँ हो गइल बानी। देहि मउनी में कसे लायक हो गइल बा। कहीं बाहर आ—जा ना पावन बानी बाकिर अबहिन बोली टन—टन बा।

मिसिर जी क जीवन एगो सादगी के उदाहरन बा। गाँव से बहरा अपनही लगवले आम के फलवारी में फूसे के मङ्डई में कुट्टी निझियर हमेसा निवास कइलीं। अजुओं ओही में रहत बानीं। लोग ओ बगिया के 'बाबा के फुलवारी' कहेला। देही पर बस्तर के रूप में खद्दर के धोती आ एगो छोट नरखा पहिरत रहली जवन अजुओ बा। उहाँ के बाल्मीकी रमायन, रामचरितमानस, अमरकोस आ लघुसिद्धान्त कौमुदी के स्वाध्याय, रचना लिखल अउर खेती—बारी कइल—करावल रोज के कार रहल। मिसिर जी बेवहार में कठोर अनुसासन के कायल रहलीं हं। अबहिन बुढ़उती में रोजो नियमित रूप से रमायन पाठ करीलें। ए समे अलंकार पर लिख रहल बानी।

श्री धरीक्षण मिसिर जी भोजपुरी आ खड़ी बोली दूनू में रचना कइले बानी। भोजपुरी में राजनीतिक अउर समाजिक

व्यंग लिखले में इहाँ के समान केहू सानी नाहीं बा। इहाँ के एमें बड़ महारथ हासिल बा। राजनितिक व्यंग सम्बन्धी रचनन में 'शिवजी के खेती', 'कुक्कुर पुरान', 'सांप के सुभाव', 'बादर से', 'रामराज्य' अउर 'सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर' राजनीतिक व्यंग सबसे निमन रचना बा। सामाजिक व्यंग सम्बन्धी रचनन में 'बरक्षण', 'तीलक', 'खीर खवाई', 'भतवान के मनावन', 'ओगेरह निमन बा' बाकिर 'कवना दुखे डोली में रोवति जाली कनियाँ' सामाजिक व्यंग दमदार अप्रतिम रचना बा। भोजपुरी में मिसिर जी मात्रिक अउर वर्णिक दू तरह के कठिन छन्दन के प्रयोग इहाँ के साधना के उजागर करत बा। छन्द अउर अलंकार के प्रयोग ढेर मिलला से ई बुझाला जे इहाँ पर श्री केशव कवि के काव्य शैली के प्रभाव पड़ल बा। मिसिर जी के अबहिन ले खाली एगो पुस्तक 'शिव जी के खेती' चइत रामनवमी सम्बत् २०३५ में छपल बा। 'कागज का कवन मदारी है' छपे वाली बा जवने के चइत रामनवमी सम्बत् २०५१ के दिन विमोचन होई। अलंकार पर लिख रहल बानी। देखल जाँव कवलें पूरा होले। उहाँ के हमनो के अरदुआई लेके जी अउर भोजपुरी के सेवा करीं।

श्री धरीक्षण मिसिर जी के लिखे वाली जिनगी के शुरुआत एगो बड़हन घटना से भइल जवने के प्रेरना उहाँ के कविता विधा में मोड़ दिहलसि। येही जू से सिरजन के बीया उहाँ के हियरा में अँखुआइल जवन आजु पसरि के लदर-बदर गइल बा। घटना १६३४ के रहल। गोरखपुर 'सेन्ट एन्ड्रयूज कालेज' में राजनाथ पाण्डेय अध्यक्ष हिन्दी विभाग अपने संजोजन में

कवि-सम्मेलन आयोजित कइलन। राजा साहब तनकुही मुख्य अतिथि रहलन। उनही का उद्घाटन करेके रहल। मिसिर जी राजा साहब के साथे सम्मेलन में चल गइलीं। राजा साहब सम्मेलन के उद्घाटन के किछु समय बाद जंगल में शिकार खेले चल गइलें। कवि-सम्मेलन श्री रामचन्द्रशुक्ल जी के अध्यक्षता में चारि दिन ले चलल। धुआंधार कविता पाठ भइल। ए सम्मेलन में एक से बढ़ि के एक दिग्गज कवि, लेखक पधरले रहलें। प्रयाग से श्री नरायन चतुर्वेदी (डाइरेक्टर शिक्षा विभाग बाद में भइलीं) बस्ती के 'द्विजेश' जी जइसन हस्ती आइल रहल सब। मिसिर जी चारि दिन ले खूब जमिं के कविता पाठ सुनलीं जवने से हियरा गदगद हो गइल, मन आनन्द-विभोर हो उठल। ये सम्मेलन के उहाँ पर अतना असर परल जे घरे अवते उहाँ के भीतर कविता के धारा फूट पड़ल। गोरखपुर सम्मेलन के अच्छरसह आँखि देखल बरनन कवित्त, सवैया अनेक छन्द में लिख दिहलीं। बिहाने राजदरबार में राजा साहब के सुना दिहली। सुन के राजा बड़ा खुश भइलन अउर मिसिरजी के सगरो कवितवा गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' सम्पादक-'सुकवि' पतिरिका कानपुर लगे भेज दिहलन। सनेही जी के अपने 'सुकवि' में मिसिर जी के किछु बड़ाई जोड़ के सगरो छापि दिहलन। तबे से मिसिर जी कविताई शुरु क दिहली जवन आजु के गंगा के धार के तरे बहति बा। 'सुकवि' में सनेही जी द्वारा मिसिर जी के बड़ाई के दू डाड़ी—“भाषा साधारणतः शुद्ध है। नयी-नयी उपमाओं से कवि के प्रतिभा का पता चलता है

किन्तु कहीं-कहीं संकर्मक क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग करना भूल गये हैं। परन्तु इसके लिए वो क्षम्य हैं शायद उनको इसी तरह बोलने का अभ्यास हो।"

ये तरे मिसिर जी कविता बनावे अउर राजदरबार में सुनावें लगलीं बाकिर राजा के झुठहउवाँ बड़ाई वाली कविता भा गीत ना सुनाई। जवन साँच होखे ओही के लिखीं आ सुनाई। राजो इहाँ के बहुते माने। राजा साहेब के भीतर तर्क बुद्धि बड़ा तेज रहल। कवनों कविता मन से सुने अउर गुनें। आदर दें। राजा साहेब के जनमदिन हर साल मनावल जा ओपर मिसिर जी के कविता देखीं—

जनमदिन आपके राजन हमनियों का मनाइले,
दुनियाँ भर के उपमा तमकुहीये में पाइले।
अगर कहु कहे कुम्भ हरिद्वार में होला बड़ा धक्का,
तड हम पूछीं तमकुही कबो कुस्ती देखे आइले॥

सचहूँ के राजा पहलवानन् के बड़ा आदर दे अउर हर साल बहुत बड़वर दंगल करावें।

मिसिर जी बड़ा निडर कवि रहलीं। साँच कहतमें तनिको डेराई ना ओके बड़े मारमिक ढंग से व्यंग में कहीं। राजा साहेब के ब्रिटिस सरकार सी.आई.ई. (कम्पेनियन आफ इण्डियन इम्पायर) के उपाधि दिहलसि। सभ दरबारी—मंत्री लोग बड़ा खुश भइल। गोरखपुर में जाके राजा के स्वागत कइल लोग अउर बधाई दिहल लोग बाकिर मिसिर जी गोरखपुर ना गइनी बाद में जब इहजा साहेब के जनमदिन तमकुही में मनावल गइल तब ओमें गइलीं अउर राजा साहेब से कहलीं—सब लोग रउरा उपाधि पवले पर गोरखपुर गइल, स्वागत कइल, बधाई दिहल। हम नाहीं गइलीं कारन ई

बा जे सी.आई.ई. के उपाधि रउवाँ के झुठहउवाँके दियाइल बा। ई उपाधि गरब भा अभिमान लायक ना बा। रउरा राजा—महाराज खुदे बानी। कहिके कविता में व्यंग सुना दिहलीं—

श्रृङ ओरा हाथ में, लिए न एको बार।

सनद सी.आई. की तुम्हें क्यों कर दी सरकार॥

राजा नराज न होके गुनलें अउर हँसि दिहलन। राजा के नेह के मिसिर जी के लाभो मिलल। पहिले इहाँ के लगे खेती—बारी कम रहल बाकिर राजा के जब सिरि बिकात रहे तब इहाँ के खरीद लीं। बिना पइसा दिले मुफुत में कबो खेत ना लई। हँ एक बात रहल खेत के जवने दाम इहाँ जुटे राजा सवीकार क ले। ये तरे इहाँ ये लगभग आजु भी ५० विघ्ना खेत बा बाकिर पलिवारों बड़हन बा।

मिसिर जी के कविता में गम्भीर जीवन दर्शन भरल बा। इहाँ के व्यंग मनई के भीतर ढुकि के अवडेर देला। सबकेहू सोच पर मजबूर हो जाला। कविता पाठ कइलो में इहाँ के ढंग निराला रहलं येही से कुशीनगर कवि—सम्मेलन में संचालक डॉ. राजकुमार पाण्डेय रीडर अउर अध्यक्ष—हिन्दी विभाग वु.स्ना. म. वि. कुशीनगर मिसिर जी के आहूत करत कहलीं, इहाँ के कौना दुखें डोली में रोवति जाति कनियाँ" कविता सुनाइबि। ए कविता सुनवला के बाद न केहू कवि कविता सुनवले के मूड में रहिजाला अउर न स्रोता दूसर कविता सुनले के मूड में रह जालें।

इहाँ के भीतर मनन शक्ति अउर तरक बल बड़ी तेज रहल। राज दरबार

में एक जने महात्मा अझलन। राजा से गेयान के बाति सुनावे लगलें। ओही जू राजा लग मिसिर जी रहलीं। महात्मा जी कहलें, “संसार चक्र (जाँत) ह हमन के गोहू हई जा जे के काल पीस रहल बा। भगवत्-भजन जाँ क किल्ला है। जवने तरे जाता में जवन गोहू किल्ला लग चलि जाला ऊ बचि जाला ओही तरे भगवत् भजन करे वाला ना पिसाला। ई सुन के राजा मिसिर जी ओर तकलें अउर कहलें—‘मिसिर जी !’ अतना सुनते भर में मिसिर जी कहलीं, “जवन गेहूँ पिसा गइल तवने के रोटी बनल, देवता के चढ़ गइल

अउर मनई खा लिहलें बाकिर जवन किल्ला लगे बचि गइल ऊ बिहाने फेंका जाई, अउर नाहीं त कुक्कुर खाई।

राजन के राज खतम भइल। सुराज भइल। मिसिर जी देस, समाज, नेतन पर लिखे लगलीं। उहाँ के कविता ‘सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर’ सब जगह सराहल गइल बा। अबत उहाँ के नबे बरस के बुढ़उती आइ गइल बा तबो भोजपुरी माई के सेवा में लगल बार्नी। पहिला ‘विश्व भोजपुरी सम्मेलन’ के सबसे बड़वर पुरस्कार ‘सेतु’ (बम्बई) द्वारा दिहल गइल। ♫

ग्यान खातिर ग्रंथ ग्रंथ जीवन-साथी आ

ग्रंथ के सुरछा खातिर
जिल्द-गत्ता चार्ही।
उत्तम किस्म के हर प्रकार
के गत्ता (कूट)
के निर्माता

महाबीर रस्ट्राबोर्ड फैक्टरी

(कूट मिल) रामनगर

प० चम्पारन (बिहार)

पत्र व्यवहार से सम्पर्क करी।

ऊनी, सूती, सिल्क
कपड़ा आ सूटिंग-सर्टिंग,
पद्धा।

सब तरह के सुन्दर से
सुन्दर साड़ी खातिर
हमार सेवा जरूर ली।
कम दाम, टिकाऊपन
हमरे दुकान के
विशेषता बा।

प्रो० मु० लैस
अप्सरा साड़ी सेंटर

रनजीत बाबू के मार्केट,
बगहा—२ प० चम्पारण
(बिहार)

डॉ. रामदेव शुक्ल
६, हीरापुरी
गोरखपुर-२६३००६

करइली साधू कालि फेरु गाँव छोड़िके
कहीं निकलि गइलें। ई कवनो नइकी बाति
नाहीं बा कि साधू फेरु गाँव छोड़लें। गाँव
त ऊ तबसे छोड़ते रहलें जबसे सधुअइलें,
बाकी एह बेरी के बाति दूसर बा। कालिक
से गाँव में उनहीं के नाम सभे चुभलावत
बा। पनमतिया के माई साधू के पानी पी
पी के गरियावति बा। गाँव के लोग
अदबदा के पनमतिया की माई से पूछत
बा। आ ऊ साधू के सवादू कहि-कहि के
गरियावतिबा। पनमतिया के माई गाँवे भरि
के भउजाई लागे ले। ओकर एकहरी देहि
बाँसे के कइन जइसन लचकति रहेले।
उमिर के कवनो परभाव ओकरी देही पर
परबे नाहीं कईल। ओकर मरद कोइलारी
गईल आ होही जु कवनो बंगालिनि के घरे
बैठा लिहलस। तबसे ई अकेले बा। ऐकरा
कबो एको लइकनी भझल रहलि होई।
जवने के नाव पनमतिया रहल होई। तबे
न ई पनमतिया के माई कहाले। ओइसे ऊ
अकेले रहेले। गाँवे भरि के लोग ओसे हँसी
दिल्लगी करत रहेलें। आपन एक ठो खेत
बटाई देके ऊ आपन लुग्गा रोटी चलावेले।
बाकी ओके देखि के ई नाहीं बुझाला कि
ओकरा कवनो दुख बा। सबके हँसावत
रहेले। लइकन के त ऊ झुण्ड लगवले
रहेले। पनमतिया के माई कबो केहू पर
रिसिअइबो नाहिं करेले। बाकी ए बेरी ना
जाने कवन अनहोनी हो गईल बा कि ऊ

सधुइया पर बहुत रिसिआइलि बा। गाँ के
लोग ईहें जानल चाहत बा कि ऊ कवन
बाति हृज जवने से साधू के गरिआवति बा।
दुसर की ओर ईहो बहुत अजगुत बाति बा
कि ऊ करइली साधू के ऊपर रिसियात
रहेलें। उनकी ऊपर केहू नाहीं रिसियाला।
करइली साधू सबकी ऊपर रिसियालें आ
तबो केहू उनके ऊपर नाहीं रिसियाला।
एकर लमहर कथा बा ई कथा उनके नाँव
'करइली साधू' जरी के नाहीं हवे जरी के
ऊ त सधुओं नाहीं हउवें। उनके सधुआई
आ उनके करइली नाँव के जरि-पुलुई
एके में बा उनके महतारी-बाप उनके नाव
धइले रहल परमेसर। जब ऊ चारि बेर घर
छोड़िके साधुन के जमात के रहिके
सधुआई के मजा चीखि लिहलें तब अुनके
नाँव हो गईल 'परमेसरदास। एकरे बीच वे
में 'करइली' घुसरि गइलि।

ई बात तब के हृज जब ऊ पूरा
सधुआइल नाहीं रहेलें। कुछ बोल ठोल
कइले पर परमेसर घर से निकसि गइलें।
दू चार महीना खोज पूछि के आ रो-गा
के जब उनके घर वाला चुपा गइलें तब
एक दिन ऊ ओने से लवट अइलें। दू चार
दिन ले घर के, गाँव के लाग बड़ा सेवा
जतन कईल। धीरे-धीरे सब ठण्डा हो
गइल। एक दिन परमेसर खाये बइठले त
रोटी की साथे करइली के तरकारी धईल
रहे। दू चारि महीना बहरा रहि के उनकर
जीभि त चटकार हो गईल रहे। अब भला

करइली के तरकारी से सुख्खे रोटी कइसे घोटाई ? देखि के झङ्गकि—गइलें। कहले “हम करइली नाहिं खाइबि।” एह पर उनकर महतारी कहली कि “कौनो तोड़ा कमा के ले आईल बाड़ का, कि हम बारहो बिजन बना के तहरा के खियाई ? खइबउ तड़ खा नाहिं तड़ जाऊ।” महतारी के बाति सुनि के परमेसर थरिया सरका के उठि गइलें। दुआरे अइलें त उनके पितिया पूछ लें कि “का हो परमेसर, का भईल ? काहें मुँह फुलवले बाड़ा ?” तबले परमेसर के महतारी घर में से हाथ चमकावत निकल ली अउर कहली “खाये में हाथी कमाये में बाँछी। अरे जे दू चार पइसा कमात होखे तड़ ऊ खइले में नखड़ा करे तड़ कुछ बुझइबो करी। ई भेड़ी के भसुर अस बईठल रहेलें। न कुछ करे के न धरे के। अउर खाये के बेर नौ नखरा।” परमेसर के महतारी के बात सुनि के कुछ अउरी लोग जुटि आईल। मुँहा मुँही ई बात गाँवे भर में फईल गइलि कि साधू करइली की कारन भुखइले रहि गइलें। बिहान भइले लइकन के ई बात मालुम भईल, त ऊ कुलि परमेसर के देखते थफरी बजा बजाके ‘करइली’—‘करइली’ चिल्लाए लगलें। कुल दुइओं चारि दिन में ई हालि हो गईल कि सेयानो लोग ए खेलवाड़ में मजा लेवे लगलें। परमेसर के देखते सबके मुँहे से एके बात निकले ‘करइली’। आ परमेसर ओके सुनते ‘तोरी माई के, ‘तोरी बहिन के ? पहाड़ा पढ़े लागें। जेनहे उनके कीरतन करेर होखे, ओतने लोग के मजा बढ़त जाए। जब आजिज आ गइलें। तड़ परमेसर फेरु भागि चललें। आ ऐ बेरी दस बारह बरिस ले गाँवे की ओर मुँह नाहिं

कइलें। ऐहि बीच ऊ साधू हो गइलें। परमेसर दास कहाए लगलें। बिना टिकट के झोरी झांटा आ चन्नन टीका की भरोसे, देस—देस घूमे लगलें। गाँवे के लोग जहाँ—जहाँ नौकरी चाकरी करत रहे सीलगुरि, कचरापारा, चौबीस परगना, अहमदाबाद, बम्बई सबके लगे परमेसर साधू फेरा लगावे लगलें। कबो झाँटा बढ़ा के कबो मुण्डा होके परमेसर दास एक नगर से दूसरे नगर, एक तीरथ से दूसरे तीरथ घूमे लगलें। एगो रसीद बही छपवा लिहलें। जवने में रामजी के मंदिर बनवाने के संकलप लिखल रहे। अपने गाँव जवार के साधू हउवें आ मंदिर बनवावत ताड़े ई जानि के परदेस कमायें वाला लोग दू चार, दस रुपया दिहले में कवनो कोताही नाहिं करें। साधू की दोहिंया के साथे उनकर झोरिया के अगाड़ी—पिछाड़ी दूनू मोटाये लगल। ढेर दिन बाद ढेर रुपया लेके गुरु—गम्भीर होके साधू गाँवे लौटलें। पहिले तड़ लोग नाहिं चिन्हल। जब चिन्हल लोग तड़ आदर सतकार बढ़ल। कुछ रेखिया—उठान लइका करइली मन परा दिहलें कुलि, बाकी एके बाति भईल कि एह बेर केहू उनके सामने करइली नाहिं कहें। अन्हवाँ तड़ सभे ‘करइली साधू’ कहे। समनवाँ सभे ‘साधू बाबा’ कहे। उनके महतारी तड़ उनसे बोलल के चलावे, उनकी ओर तकलो छोड़ि दिहली। सधुओ महतारी की ओर ताकल, बोलल छोड़ि दिहलें। बाप त पहिले हीं गुजर गइल रहलें। कुछ दिन बाद साधू गाँव वालन के कहले कि रउरी में उनके थोरे जमीन मिलि जाईत तड़ ओहि में एको कुट्टी आ मंदिर बनवइतें। गाँव के लोग सनमत के

उनके चारि कट्टा जमीन दे दिहल। साधू के कुट्टी छवा गईल मंदिर तड़ नाहीं बनल, बाकि साधू गाँव जवार में सूधि पर रुपया चलावे लगलें। कुछुए साल में साधू के कुट्टी ढेर जनि रैयत लोगन के घर से जियादे खुसहाल हो गईल। बैलगाड़ी, गाई, भईस, कुली हो गईल। जंजाल बढ़े लागल। जवन लइके मनबढ़ रहलें आ साधू के देखते 'करइली' कहत रहलें ऊ अब सबेरे—साँझी कुट्टी पर चाह पकउड़ी काटे लगलें कई जने बढ़े आदमियों लोग चाह पकउड़ी के ललचेसाधू के दरबार में रहे लगलें। साधू के गिरहथी पूरा जमि गईल। जवन माया छोड़ि के परमेसर साधू भईल रहलें, ऊहे माया भादो की नददी अइसन बढ़ियाये लागल।

कल्हियाँ के जानि कवन कांड भईल कि पनमतिया के माई साधू की कुटिया में से जोर से रोवति आईल। 'सुधुइया नगर लेसना' कहति निकललि। इहे काहि के गाँव में आईलि। लोग ओके घेरि लिहल। सभे ईहे बाति कहे 'काहें गरियावति बाड़े ? का भईल ? काहे रोअत बाड़े ?' ऊ कुछु नाहिं कहे। खाली रोवे बा आ साधू के गरियावे। जब लोग पूछि के हारि गईल त केहू कहल कि चलि के सधुओं से पूछि लड़ कि काड भईल ? थोरि के देर में एक जनि लौटि के अइले आ कहलें कि "साधू तड़ हइये नइखें।" तबसे सब लोग ईहे बाति बतियावत बा, जवने के जरि पुलुई जानते नइखे, कि साधू काहें गईलें, आ कहाँ गईलें, आ काड भईलन ? *

भोजपूरी भासा के उन्नायक, महान साहित्यकार, चिंतक डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय जी के सगरे भोजपुरिया लोगन, कवियन आ रचनाकारन आ 'पुरुवैया' परिवार के ओर से लोराइल श्रद्धांजलि

गीत

गणेश 'विशारद'

पौ० मलकौली

वाया नरईपुर-८४५१०५, प० चम्पारन

कौन सपना भुलाइल? अँखिया मने मने जाँचे
बतिया बोलउतनी साँचे !
बरखा के घाम जैसे हिरना कुलाँचे
बतिया बोलउतनी साँचे ॥

बादर के नैया आकासे के सागर में
खेवेले पुरुवा बेआर
रिमझिम के मोती पर सिहरी के टोना
थिरके सकल संसार
अबुझ पहेली बा उमरिया बाटे काँचे
बतिया बोलउतनी साँचे ॥

पूरनमासी टहटह चमके चनरमा
अँगना में लागे अन्हार
केहू बिना लागे सुनसान, केहू के
सिसकेला बिंदिया लिलार
भाग के अछरिया केहू कइसे के बाँचे
बतिया बोलउतनी साँचे ॥

ललछौहाँ पत्ता पर थिरकेला ओस
कहीं फुनगी पर चहकेला भोर
एके सनेसा जिआ गईल प्रनवा के
गहरा गईल पोरे-पोर
हवा भरे तान मौसम गुपचुप नाचे
बतिया बोलउतनी साँचे ॥

तनी हसी

मास्टर—रामू अपने देस के प्रधानमंत्री
के नाम बताव ?

रामू—जब पढे अइनी त नरसिंहाराम,
इम्तहान के बेरी देवघोडा, जब
परीक्षाफल निकलल तब गुजराली भइलें।
अब नाव लिखावे तक इहो गुजर
जइहें, चौथा अइहें। केतना बताईं।

(भिखारी नाट्य के परिप्रेक्ष्य में)

गीत से गद्य होत गंवई संस्कृति

डॉ० तैयब हुसैन 'पीड़ित'

हिन्दी विमान,

जेड.ए. इस्लामिया कॉलेज

सीवान-८४१२२६ (बिहार)

भारतीय संस्कृति के बड़ा भारी अंस लोक संस्कृति से प्रभावित बा। एकर परमान हमनी अपना अनगिनित रीति-रेवाज, आचरण-व्यवहार, परब-त्योहार आ समारोह आद में पाइले। संगति, नाच, मित्र, साहित्य आदि विधो में एकरा योगदान से इन्कार ना कइल जा सके।

एह संदर्भ में लोकनाटक त जइसे लोग संस्कृति के ऐनक हवे रंग-परंपरा के एगो अइसन पुरान कड़ी, जवन तरेह-तरेह से मध्यकालीन नाटकन में बहेवाली धाराअनसे मिलके संस्कृत रंगमंच से कहीं अधिका विविधता ले ले आजो अपना देश के लोक-जिनगी में खास कर गंवई जिनगी में जिअत बा।

भिखारी के सम्बन्ध बिदेसिया परम्परा से बा। एह से शैली के दिसाई भिखारी के नाटक बहुत पुरान बा, लोक नाटकन का कड़ी में गुँथाइल। १८५२-५८ ई. तक ले एकर स्रोत मिलत बा बाकिर एकरो से पहिले बिदेसिया के परम्परा रहल होई, एकर अंदाज सहजे लगावल जा सकेला। अइसन सैली में राम आ कृष्ण के लीला के होखल त एके १६वीं शताब्दी तक लेइए जाई, लोकगीतन (जनेसार, पूर्वी आदि) में परदेशी पिया के वियोग में नायिका के कलपल तबे से एकरा बीआ रूप में होय के सबूत बा जब लिखित साहित्य अस्तित्व में ना आइल रहे।

लोक कला के माध्यम से संस्कृति के एह लमहर सफर के पढ़ल समझल एकतरफ जहाँ रुचिकर होई ऊंहवें दोसरा तरफ एकरा उतार-चढ़ाव, दोसरा-दोसरा संस्कृतियन से मिलके बदलत रहल आज के साम्रदायिक माहौल में एह ऐतिहासिक सच्चाइयों पर से परदा उठाई कि कवनो संस्कृति ना त कानी गइया के अलगे नथान लेखा अछूता रह सकेले ना पाक-साफ। धरमो विशेष से एकरा कवनो खास नाता नइखे। उल्टे कठोर साँच ई बाकि आज लगभग समूचा संसार के लोग खाली एक ही संस्कृति से चलायमान बाढ़न आ ऊ ह-आर्थिक संस्कृति (उपभोक्ता संस्कृति)।

भिखारी खातिर ई सहुलियत रहे कि ऊ नाऊ (हजाम) जाति में पैदा भइल रहस जे घर-घर के बिलाई बनके सामंतिया व्यवस्था में सात पर्दा के भीतर पछाड़ खात मेहरारुअन के खबर राखत रहें।

भिखारी के समय अंग्रेजी-राज के कारण गाँवन में उथल-पुथल के समय रहे। पहिला बेर भारत के सामन्ती संस्कृति में पूँजीवादी संस्कृति दखल देत रहे। घरेलू काम-धंधा बर्बाद होत रहे। लक-दक करत विदेसी चीज शहर से गंवई हाट-बजार में घुसे लागल रहे। टैक्स खारित अंग्रेज के जमीनदारन पर आ जमीनदारन के रैथ्यतन पर दबाव बढ़ल

२. पिया गइलन कलकतवा एहो सजनी !
गोडवा में जूता नाहीं, हथवा में छतवा
एहो सजनी !!
- कइसे चहिलें रहतवा, एहो सजनी !....
३. करि के गवनवा भवनवां में छोड़िकर
अपने परइल पुरुबवा बलमुआ !!
अँखिया में दिन भर गिरे लोर ढर-ढर
बटिया जोहत दिन बीतेला बलमुआ !!
जुलमा के नतिया, उठेला जब रतिया
तिलभर कल ना परत बा बलमुआ !...
आदि।

एतने ना, पड़ोस के लुच्चा लफंगा से
ओकरा इज्जत बचावल कठिन हो रहलबा,
'जुलमा के नतिया' गारी, रोअल आ
सामना ना कइल ई सब भी न संस्कृति
गँवई संस्कृति हवे।

ओने बटोहिया के समुझवले पर
बिदेसी अपना दोसर का शहरी मेहर से
बहाना बनाके छोड़ के लवट त आव ताडन
घरे बाकी ई दोसर का मेहर पहिल का
लेंखा आठ-आठ ओँसू रोये के पक्ष में
नइखे। ओकरा भावना से जादे बुद्धि से
लगाव बा। ऊ दोसर के दिन मय
बाल-बच्चा पूछताछ करत पति के घरे
गाँव में पहुँच जा तिया। अब एगो दोसर
नया समस्या खड़ा होता कि एह मेहरारू
के का होय ? नाटक दुनों सउतिन के
बहिन लेंखा रहे के सीख देत खतम होता।

अब अखियान के अन्तर करीं, काहे
कि पहिला बेर गँवई आ शाहरी संस्कृति
दू नारियन का रूप में एक दोसरा से
रू-ब-रू बा।

गँवई संस्कृति में बहाना भा झूठ छल
से सिधुआ आदमी के ठगल आसान रहे।
उहाँ बुद्धि के जगहा सम्वेदना से काम
जादे लिआए बाकी शाहरी में ठीक एकरा

उल्टा स्थिति बा। हँ, शहरी संस्कृति छूत
रोग लेखा घरन में बसेर ले लेता। आम
समाज में दू जनाना के साथे एगो पति
के रहे के निर्णय साइत एही शहरी
संस्कृति के उपज ह।

'भाई-विरोध' नाटक में एगो भाई
'उपदर' बड़ भाई 'उपकारी' से बँटवारा
चाहता। ग्रामीण प्रंच एह बँटवारा के पक्ष
में नइखन। ऊ उपदर के धमकी
देताड़न—“ना मनबे त तोर पानी बन्द हो
जाई। चिराग-बत्ती ना बरे दियाई।
शादी-बिआह में पिसाई केहू ना करी।
गीत गावे ना जाई।”

उपदर इतमिनान से जवाब देता
कि—ऊ दरवाजा पर चाँपाकल गड़वा ली,
हनाहन पानी गिरी। घर में बिजली बत्ती
लगवा ली। झकझक रोशनी होई।
आटाचक्की में पिसवाई आ गीत
लाउडस्पीकर से गवाई। लोग तमासा
देखत रह जाई।

माने के होई कि विज्ञान के प्रवेश से
'अकला चलो' के ई नया प्रवृत्ति गँवई
संस्कृति में सिर उठावत लउकता। सहयोग
के भावना कमजोर पड़ल जाता।

भिखारी के सबसे प्रौढ़ नाटक 'धिंचोर
बहार' बा। जेह में बहुते दिन तक ले
परदेस रहल पति जब घरे लौटताड़न त
उनकर जोरु दोसरा के बेटा के मतारी
बन चुकल बाड़ी। समस्या बच्चा पर
अधिकार लेके खड़ा होता, काहे कि
दावेदार तीनयो आदमी बा-पति, प्रेमी आ
मतारी। (यथापि ई नाटक एगो लोककथा
पर आधारित बा आ इहे थीम कमोवेश
ब्रेख्त के नाटक 'खड़िया का घेरा' के भी
बा बाकी कथा के चुनाव में ओह घरी के
मानसिकते भिखारी के बाध्य कइले होई।)

2. पिया गइलन कलकतवा एहो सजनी !
गोडवा में जूता नाहीं, हथवा में छतवा
एहो सजनी !!

कइसे चहिले रहतवा, एहो सजनी !....
3. करि के गवनवा भवनवां में छोड़िकर
अपने परइल पुरुबवा बलमुआ !!
अँखिया में दिन भर गिरे लोर ढर-ढर
बटिया जोहत दिन बीतेला बलमुआ !!
जुलमा के नतिया, उठेला जब रतिया
तिलभर कल ना परत बा बलमुआ !....
आदि।

एतने ना, पड़ोस के लुच्चा लफंगा से
ओकरा इज्जत बचावल कठिन हो रहलबा,
'जुलमा के नतिया' गारी, रोअल आ
सामना ना कइल ई सब भी न संस्कृति
गँवई संस्कृति हवे।

ओने बटोहिया के समझावले पर
बिदेसी अपना दोसर का शहरी मेहर से
बहाना बनाके छोड़ के लवट त आव ताडन
घरे बाकी ई दोसर का मेहर पहिल का
लेंखा आठ-आठ ओंसू रोये के पक्ष में
नइखे। ओकरा भावना से जादे बुद्धि से
लगाव बा। ऊ दोसर के दिन मय
बाल-बच्चा पूछताछ करत पति के घरे
गाँव में पहुँच जा तिया। अब एगो दोसर
नया समस्या खड़ा होता कि एह मेहरारू
के का होय ? नाटक दुनों सउतिन के
बहिन लेंखा रहे के सीख देत खतम होता।

अब अखियान क के अन्तर करीं, काहे
कि पहिला बेर गँवई आ शाहरी संस्कृति
दू नारियन का रूप में एक दोसरा से
रू-ब-रू बा।

गँवई संस्कृति में बहाना भा झूठ छल
से सिधुआ आदमी के ठगल आसान रहे।
उहाँ बुद्धि के जगहा सम्वेदना से काम
जादे लिआए बाकी शहरी में ठीक एकरा

उल्टा स्थिति बा। हूँ, शहरी संस्कृति छूत
रोग लेखा घरन में बसेर ले लेता। आम
समाज में दू जनाना के साथे एगो पति
के रहे के निर्णय साइत एही शहरी
संस्कृति के उपज ह।

'भाई-विरोध' नाटक में एगो भाई
'उपदर' बड़ भाई 'उपकारी' से बँटवारा
चाहता। ग्रामीण पंच एह बँटवारा के पक्ष
में नइखन। ऊ उपदर के धमकी
देताड़न—"ना मनबे त तोर पानी बन्द हो
जाई। चिराग-बत्ती ना बेरे दियाई।
शादी-बिआह में पिसाई केहू ना करी।
गीत गावे ना जाई।"

उपदर इतमिनान से जवाब देता
कि—ऊ दरवाजा पर चाँपाकल गड़वा ली,
हनाहन पानी गिरी। घर में बिजली बत्ती
लगवा ली। झकझक रोशनी होई।
आटाचक्की में पिसवाई आ गीत
लाउडस्पीकर से गवाई। लोग तमासा
देखत रह जाई।

माने के होई कि विज्ञान के प्रवेश से
'अकला चलो' के ई नया प्रवृत्ति गँवई
संस्कृति में सिर उठावत लउकता। सहयोग
के भावना कमजोर पड़ल जाता।

भिखारी के सबसे प्रौढ़ नाटक 'धिंचोर
बहार' बा। जेह में बहुते दिन तक ले
परदेस रहल पति जब घरे लौटताड़न त
उनकर जोरु दोसरा के बेटा के मतारी
बन चुकल बाड़ी। समस्या बच्चा पर
अधिकार लेके खड़ा होता, काहे कि
दावेदार तीनयो आदमी बा-पति, प्रेमी आ
मतारी। (यथापि ई नाटक एगो लोककथा
पर आधारित बा आ इहे थीम कमोवेश
ब्रेख्त के नाटक 'खड़िया का घेरा' के भी
बा बाकी कथा के चुनाव में ओह घरी के
मानसिकते भिखारी के बाध्य कइले होई।)

बारन, जे समकारा काम आवे लें रा-बिरात, बेरा कुबेरा। बहंगी ढोआई से लेके बिआह-सादी तिलक-गौना, हरवाहिवो चरवाही ना, वलुक गाय-भईस का गरम भइला पर, तीन कोस दूर, सरकारी फारम का सांड-भईसा का पासे संगे संगे लेके चल जालें बिना कवनो ही-हवाला के।

बाकिर इहे खास बात ना रहे, जे लोग एह जाड़ा-पाला में आधा रात के फुलेना ब के चीत्कार सुन के धउर गइल रहे। फुलेना अइसन आउरो मजूर बारन एह गाँव में। असल बात रहस खुद फुलेने ब भउजी।

बरिसे दिन आगे, फुलेना, इनकारा के बिआह के ले आइल बारन। फुलेना ब-भउजी सुन्दर त बरले बारी। संगे संगे मांसल आ अल्हड़-हंसमुखो बारी। इनकारा में सब गुणे गुण बा सिवाय एकरा, जे एह अधेर बोका फुलेना के इ छप्पन-छुरी मेहर केहू के ‘भौजाई’ नइखी बन पवले। जबकि कायदा का अनुसार, इनकारा गाँवभर के भौजाई बन जाये के चाहत रहे। लोग अपना जानते कुछुओ उठा ना रखले रहे। बाकिर, कवनो पानीदार घोड़ी अइसन, देह पर हाथ धरे के त बाते छोड़ दिहीं, जबान से भौजाई निकलते, इ विदक के लताड़ झाड़ दिहल शुरू क दिहले रही। इ, अपनापन के बात रहे कि गाँव का हर बरकुआ लोगन का नव-उठान कुंवर लोगन खातिर। संतोख के बात अतने बा, जे इ केहू के पता नइखी दिहले। एह धउर में सभे मुँह के खइले बा।

—त, ओह दिन राति खानि, अतना दिन का बाद मोका मिलल रहे लोगन का उनकारा विपत में काम आवे के। एह मोका

पर अधेड़ो लोग पाछा ना रहल रहे। गाँव का आबरू के सवाल रहे।

रात-बिरात में एगो अबला नारी का चीत्कार पर ना धउरल जाई, त भला कब धउरल जाई। ‘फुलेना-भइया’ घरे रहतें, त कवनो बात रहीत। उ बेचारा त तीन दिन से खेखन बाबू का ससुरारी बहंगी लेके गइल रहे।

लोक, एके दम में उनकारा मड़ई का सामने चहुँप गइल। पहिले त उ दरवाजे ना खोखली। जब बहुते कहला-सुनला आ अपनापन के भरोसा दिहला का बाद, बहरा निकलली, त, लाख पूछते लोग रह गइल, बाकिर अपना मुँह से कुछुओ ना कहली। त, जब केहू कुछु बोल ना करी, त भला ओकर का मदत कइल जा सकत रहे।

हालाकि ओह रात, नवयुवकन के मरदानगी देखते बनल रहे। सभे, एक से बढ़ के एक ललकारत आवाज में, पूरा सुतला गाँव के थरथरा दिहले रहे। ‘भौजी’ का मड़ई का सामने का कोला में एगो चप्पाकल रहे। आस-पास के जमीन गील रहे। ओह जमीन पर, नवजवान लोग, हावा में अतना लाठी पीटले रहे जे करीब तीन धूर के जमीन गड़ही बन गइल रहे।

बाकिर फायदा कुछुओ ना भइल रहे। एको बात ना निकसल अतना भरोसा दिहला का बादो भौजी का मुँह से। अब आंदाजे का समझल जा सकत रहे। हँ, गाँव के औरत लोग जरूरे अंदाजा लागा लिहलस, जे का मोमिला है। सभे भौजी के चाबासी दिहल, जे इ अपना सतीत्व के रछा बहादुरी से क लिहले रही। ना जाने आन्हारा के फायदा उठा के केउन मुँहझौंसा आपन मुँह करिया करे आइल रहल है।

इ, सतीत्व के रछावाली बात कुछ अतना ना जोरदार ढंग से उठल, कि गाँव का सब नवयुवकन के नीन हराम क दिलस। सब लोग, एक दोसरा के ईरसा का नजर से देखे लागल। कउन रहल ह उ करम के सांढ़ ! ओकरा के खोज निकालहीं के होई। भउजी नया—नोचर बाड़ी। फुलेना—भाई, कई—कई दिन बाहरे रहेलें। इ त ठीक बात नइखे। एह लोगन का जरूर से जरूर कुछ ना कुछ जाल्दीये करे के चाहीं। जब चिरई खेते चुग जाई, त क के का होई।

आ भउजी के 'देवर' लोग एकदम से पक्का जासूस बन के फुलेना ब का मड़ई पर, एक दोसरा से छिन—छिपा के, रात—दिन, बेरा—कुबेरा भिनभिनाये लागल एकदम से मधुमाछी लेखा। अब गाँव का बुजुर्ग लोगन के डरो ना रहे। केहू पूछीत, त कह दिआईत जे, ओह दुष्ट के नाँव पता जाने आइल रहले हं। एह गाँव में अइसन अनाचार करे के दुस्साहस कइले बा, काल्हु मन बढ़ जाई त, आउरी लोगन के अपना हवस के सिकार बना लिही। आ, देखत देखत, 'भौजी' का एह अनचाहा 'देवर' लोगन के अतना ना संख्या बढ़ गइल, जे उनकरा नितकरम में बाधा पहुँचे लागल। गाँव के मोमिला। कम से कम भिंसहरा आ बेरा—झूबान के 'खेते' जायेका बेरा त अकेल चहवे करेला। बाकिर, इह दूगो बेरा बांचल रहे, जब भौजी से अकेल में बतिआवल जा सकत रहे।... ना, त, मड़ई में त, हरमेंस दू—चार जने आपुसे में टकराइये जाते रहे।

—बाकिर, भौजी का एह नवयुवक लोगन के निःस्वार्थ सेवा भाव पसंद ना

आइल रहे। पहिले त उ, दबल जबान में, बाद में दुत्कार के एह लोगन के खदेड़ल सुरु कइली।

—खदेड़ते, इ, निःस्वार्थ—सेवी लोग आपन रंग बदललस। अच्छा, त इ बात बा !—इ सब त एह गाँव में ना चली। फुलेना भइया अइसन सिधुआ अधेड़ का बीबी के अपना इयार का संगे गुलछरा उड़ावे ना दिआई। गाँव के ईज्जत—आबरु, कायदा—कानून कुछ होला कि ना होला। साथ हीं एह लोगन का अफसोसो होखे लागल जे,—औरत, जोर—जबरदस्ती चाहे ले। उ साला बाजी मार लिहले बा, जउन पाहिलहीं दबोच के चाभ लिहले बा। कास ! इ बुद्धि एह लोगन का पहिलहीं आइल रहीत। अब, एकरा, ओकर मरदानगी भा गइल बा। बाकिर ओकर नाम सरपंचजी का सामने इनकारा कबूलहीं के पड़ी।

देखत देखत बात बढ़ गइल। बात बढ़ते फुलेना—ब के माथा ठनकल।

—ठीक बा, हमरा मदर के आ जाये दीं सभे। हम उनकारा संगहीं पंचाइत में जायेब आ खुलासा करब, जे ओह रात के का भइल रहे।

फुलेना, आठ दिन का बाद, गाँवें लउटलें। रहते में, हंगामा मचल। एह घनघोर कलयुगी महाभारत के उनकारा पाता चल गइल रहे। इहो पता चलल, जे गाँव के हर नवयुवक, ना एक दोसरा के सके का नजर से देख रहल बा, बलुक मने मने एक दोसरा का खून के पिआसलो हो गइल वा। एकरा मूल में इनकर मेहरास्ये बाड़ी। काहे से, लाख अपनापन देखलवला का बादो, अपना विपत्ति में केहू के हाथ अपना पीठ पर

नइखी रखे दिल्ली। इ सउंसे गाँव खातिर
लाज के बात बा। अब इ आ गइल बारन।
इनकारा—सामने असली अपराधी के नाम
बतलइहें।

फुलेना धउर के अपना मड़ई पर
चहुँपलें। उनकारा पाछा पाछा नवयुवक
लोगन के भीड़।

हालाकि अबर्ही रात के आठे बजल
रहे। बाकिर जाड़ा—पाला के दिन; फुलेना
ब निरभेद सुतल रही, एक हाथ का नीचा
अपना बकरी का नवजात पठरू के दबा
के आ दोसरा हाथ का नीचा, आपन
पिआरी बिलाई का बच्चा के दबवले। मड़ई
पर जसर्ही शोरगुल मचल, ई अच्चके में
हड्बड़ा के उठली। झटका से उठला से
बिलाई के बच्चा, इनकारा हाथ से कुछ
बेसीये चांपा गइल। उ, बेचैन होके, अपना
के बचावे का क्रम में छटपटा के आपन
तेज नाखून, इनकारा दूनों उरोजन का
बीचे मार दिल्लस। 'भौजी' जोर से
चीत्कार के उठली। बेलकुल ओही पहिली
रात लेखा—जब चिल्लाइल रहली।

तनी हँसी

जापानी राजदूत—लालू जी, अगर
बिहार के हमनी के सौंप दीं त हमनी के
पाँच साल में एकरा के जापान अइसन बना
देब सन।

लालू जी अपने मुखारबिंद से
चौंकरनी—अरे, रजदूतवा ! आप को गेयान
का तनिको नइखे नू लूर। हमरा के जापान
का प्रधान मंत्री एके महीना खातिर तनी
बनाइये फिर दुनियां देख कर भकुआ
जायेगा कि हमनी कइसे ओकरा के बिहार
जइसन देखनउक बना देता है।

गीत

गणेश 'विशारद'
पो० मलकौली
बाया नरईपुर
प० चम्पारन

पतझड़ के खिड़की से अँचरा उड़ा

मुसुकाइल बसन्ती बयार।

फूलन के लहँगा पतझयन के चोली,
पछिया के पायल किरिनियाँ के रोली
झीन आसमानी चदरिया बदरिया के

चनवाँ के टिकुली लिलार॥

श्रमवाँ के बगिया कोइलिया गुँजावे,
बंशी पर गोरी के कान्हा बुलावे,
गावे नजरिया बजावे उमरिया कि
दुमुकेला नदी के धार॥

फागुन के सिहरी पर सर्दी पराइल
केहू के नेहिया में प्राण लपटाइल,
ठीक अधिरतियाँ के सुन्दर सपनवाँ में
ऊठे पपिहरा पुकार॥

अँखिया के कजरा पर आइल जवानी,
थिरके कमरिया गगरिया के पानी,
धनि ऋतुजा के महिमा, अबहिनो जे
नेवता न बूझे गँवार॥ *

चौपदा

पीर सिहकेले तड हम गाईलें,
दर्द उठले पर मुस्कुराइले।
हम न मातल फिरीं जिनिगिएं पर,
मउअतो कान्ह पर उठाई लें॥

'दिनेश भ्रमर'

ई का भईल

गोपाल 'अश्क'

पोस्ट बॉक्स नं० १८

बीरगंज, नेपाल

बहुत उमेद रहे भोला बाबा के आपन अवसर बाबू से। अवसर बाबू नाँव ह एगो फटहा के, एगो लबरा के। बुलक लबरा के गाँड़ चितकवडा के। उन्हका के प्लास्टिक के जूता कहल जा पीछा में काहेकि उ प्लास्टिके के जूता अईसन गरमी में लमर जालें आ जाड़ा में सिकुड़ जालें। भोला बाबा उनकर हनुमान के नाँव से लोकप्रसिद्धि पवले बांड़े। ई उपाधि कवनो अकारन नईखे मिलल। रात दिन दुनु मिला के चारे घण्टा बितेला घर में भोला के आपन। ओहू में अवसरे का साथे। कबहूँ आशा बनके त कबहूँ सपना। भोला बाबा बचपने से बुढ़ अईसन बतियाए के सीख लेलें। भले उनकर बतकही बेढंगन के लेखा होखो बाकिर स्वभाव बिलकुल बमभोला अईसन। इहे कारन उ भोला से भोला बाबा बन गईलें। सारा गाँव जेवार अवसर के अवसरवा पुकारे बाकिर भोला खिसिअइंबो करस त बुए कहसा ना त बाबु। एह तरे अवसर, अवसर सेठ, अवसर बाबू कहईलें। ओईसे अवसर के दोसरका नाँव भट्टी के कुकुरो हवे। उ बिना बोलवलहूँ। पंचायती-ओचायती में भाग लेलेस आ अपन विचार लादे के कोसिस करस। एगो गुन रहे उनका में उ बोलस बड़ा मीठा भउजीअन का बीच में उ सेनुरिया आम रहस, जवानन का बीच में उ ईयार रहस, लइकन का बीच में खेल रहस त बुढवन का बीच में गप्प रहस। जब बोलस त मिसरी टपके। एक

बार गाँव में झामा भइल तब उ नायिका के पाठ कईले। अतना, अतना ना निमन कईले कि कई दिन ले 'हिरामन बहू' बनले रहस। अवसर में सबसे बड़का गुन रहे, सही समय पर आपन भाग चमकावल। ऊ गीरगीट लेंखा रंग बदलत रहस। उ दलिल देस कि दुःख में आपन-पराय ना देखल जाय, नेवता के पेंड़ा ना जोहल जाय। हाँ, जग परोजन में बिना बोलवले ना जाय के चाहीं। एक बेर गाँव में आग लाग गईल। बस अवसर के भाग जाग गईल। जईसे डाक्टर लोग रोग के नेवता देत रहेला, थाना-पुलिस घटना आदि के गोहरावत रहेला ओइसही नेता लोग अवसर लातलासत रहेला। अवसर बाबू के बड़ा निमन अवसर ला तलासत मिलल रहे आपन रोआब देखावेके। कूद-कूद के आगी बुतवले रहस। ओही घटना में भोला बाबा के मेहरारु आ बेटी के जान बचा के उ खांटी देवता बन गईल रहस। ओकरा बाद-अवसर बाबू गाँव-जेवार के सूखधार बन गईले उन्हका बिना गाँव में कफनो ना किनाए, चुनरी के कहो। एही से बदे कबो अवसर बाबू फुल के ढाबुस बन जास।

जब देश में प्रजातंत्र आईल आ कईगो पार्टी खुल्ली सं, त अवसर बाबू के आपन भविष्य चमकावे के अवसर मिलल। उ पुरनका पंथ छोड़ के ताम झाम का ओर आकर्षित भईलें। समाचार में छपल कि अवसर बाबू आपन पाँच सौ कार्यकर्ता का

साथ समाजसुधारवादी पार्टी में जा मिलते। एह निर्णय से गबंडिया मन चोटाईल बाकिर नेता के चपलुसी पर भोरा गईल। हालाकि भोला बाबा समझाये के साहस कईलहूं रहस—बबुआ अवसर, सोच समझ के आगे बढ़िहे है। कबो कबो मुंहकुनिए गिर जाए के परेला। हर चमके वाला चीज हीरा ना होला। तूं त खुदे चालाक बाड़ चादर देख के टाँग पसरिहे है। अवसर बाबु के गाँव रास ना आईल। जब उ शहर धइलन, गंवईया औँख लोराईल। अब त उनका गाँव जनमधरती से ससुरार बन गईल। उ राते आवस आ पराते चल जास। बुझाय जे गवना करावे आईल बांडे। भोला के नेवता स्वीकार करके एक बेर गाँव आईल रहस। फुलवा, भोला के बेटी, अपना गाँव में पहिलकी लड़की रहे जवन स्कूल पास कईले रहे। सतनारायण बरत के कथा रहे। ओही में अवसर आईल रहलें। गोदी में खेलल फुलवा के मस्ताईल आ गदराईल जवानी देख के उपर से नींचा ले ललचा गईल रहस अवसर। आपन विचार गंदा के सहर लौटल रहस।

सहरों में चीत ना लागे। रहि रहि के फुलवा के लजाईल आ मुस्काईल का साथे दिन रात अइसन बोली इयाद आ जाय—‘चाचा जी ! चनाइमरीत।’ साँच पुछीं त फुलवा भी उनकर रात के नींद आ दिन के चैन छिन ले ले रहे। उ मौका के ताक में रहस।

आखिर मौका मिलिए गईल। सबेरे—सबेरे भोला बाबा आ फुलवा के देख के अवसर बाबु के भौं नाचल, ओठ पर एगो मुस्कान उभरल, औँख में सपना के रंग भर गईल आ मन में हवस के आग दहक गईल। भूचाल आ गईल मन में। फूट

गईल ज्यालामुखी। मन के सईत के अवसर भोला बाबा के शहर आवे के कारन जनलें। जब मालुम भईल त मोंछ अईठत कहलें—ब, अतने काम ला फुलवा के शहर आवे के परल है। अगर पहुना लोग दहेज का बदला में नेपाली नागरिकते लिहें त कवनो बात नईखे। वह काम त पलक झपकावत हो जाई। आखिर सिडिओ थाना—पुलिस के संगत कहिया काम लागी। ईहा अवसर बाबु नेता के क्वालिफिकेशन बतवलें। कहलो गईल बा कि उ नारी ना जे हाँ कहे आ उ नेता ना जे ना कहे। बाकिर भईल ई कि आज बिहान करते करते सात दिन बीत गईल, नागरिकता ना मिल सकल। पलक झपकते में होखे वाला काम जब सातो दिन में ना भईल, त भोला बाबा पुछ बईठलें—का हो अवसर, तूं त पलके झपकते में काम करावत रहल ह। अब का भईल ? तहर सोरस—वरिस काम ना कईलख का ? ना नू भईया, ससुरा सिडियो, विपक्षी में के नू ह। लड़ाई नू चलेला पक्ष—विपक्ष में। चिन्ता मत कर। आज शनिचर होईए गईल, बिहान खेप के परसों हमनी के बड़का नेता आवत बांडे। ससुर के नाती करिहें। त का बाप के भरोसे अदौरी भात, भोला एकाएक बोल पड़लें। तिलमिला गईलें अवसर। अब मौका मिलल बा त जवन मन करे कह बाकिर हम किरिया खात बानी कि ई हप्ता में तहर काम करे के छोड़ेब। एकरा ला भूख आंदोलन करे के पड़ी, त करेब, घेरा डाले के पड़ी त डालेब, जेल भरो अभियान चलावेके पड़ी लगे एगो नियमावली रहेले, त नेता का के लगे एगो नियमावली रहेले, त नेता का लगे हजारगों। ई ना भईल, उ भईल।

भोला बाबा मान गईले। रात हो गईल बातेचीत में। गाँव के आदमी साँझ होते सुते वाला, जब दस बज गईल त लगले कुर्सिए पर अधूंआए। बिछावन लागल। बाप-बेटी सुतले। कुछ रात बितल, त एगो आदमी आईल, भोला बाबा के बोला के ले गईल। अवसर बाबू दारू पियावे लगले। गाँव में कबो अईसन पार्टी चलत रहे से भोला चुपचाप पीए लगले। निसा ढेर चढ़ गईला से निचर्हीं सूत गईले।

फुलवा आपन गमक बिखेर निदियाईल रहे। सांस के उठला-बईठला से छाती ऊपर-नीचे होखत रहे। जवानी त सांचों के तमतमाईल रहे। अवसर मिलल। हवस के कदम बढ़ल आ बढ़ते चल गईल। देखते देखते फुलबा के ईज्जत लथफथ हो गईल, फुलवा लूट लिहल गईल। लूट लिहल गईल विश्वास के संसार, उजाड़ लिहल गईल सपना के कुटी। बाकिर.... बाकिर अवसरो नाहीं बचले। फुलवा रणचण्डी बन गईल। खांटी काली माई। आ... आ उठवलस दाँत रुपी हथियार, कुटी-कुटी क दिलस अवसर के गुप्तांग। काम तमाम। ले लिलहस आपन अपमान के बदला। फुलवा खुनी हो गईल। भीड़ खचाखच भरल रहे। पुलिस अवसर के लास आ फुलवा ले मिसाईल जवानी-जिनिगी, घेरले रहे। सबके ओँखि में फुलवा का प्रति संवेदना आ सहानुभूति के आँसू रहे बाकिर फुलवा के ओँखि गुमसुम गदराईल, मड़राईल ना कवनो डर—ना कवनो पछतावा। हाँ ओमे रहे बदला आ तेज के आँच। नागरिकता मिलते रह गईल। फुलवा पकड़ लिहल गईल। भोला बाबा छाती पीट-पीट के रोए लगले—‘ई का भईल—?’

किरकिटिया बोखार

चितरंजन भारती
पो.—पेपरनगर

मोकोकचुंग, नागार्लैड-७६८६६३

‘देखी साहेब, आज पैचवा दिन ह, उ फाइल देख लेती, त हमार काम हो जाईत। गाँव के नथू पहलवान दफ्तर में गिड़गिड़ात रहे—दू कोस दूर गाँव से पैदल आएल हई हजूर? खेती के समै ह, परिवार बड़ा बाटे कुछेश करी माई जी।’

‘देख, हमनी के तंग जिन कर, कल आ जइह, आज किरकेट मैच के अतिम दिन ह, ओकरे मारे फुरसत नईखे’ बाबू बोलले, त उ फिर गिड़गिड़ाए लागल—‘कल खेत में पानी छोड़ के ह हजूर, एही खातिर आजे काम कर देती त...।’

‘ठीक बा, त दुपहरिया तक रुके के पड़ी।’

नथू पहलवान कहाँ जाव, से उ बाबू के बात पर विस्वास कर खइनी ठोंक ओकरा मुँह में दखलस आ ओहिजे बाहिर बइठ रहल, तनका देर बाद उ बाबू के पास दोसर बाबू आके पूछलन—‘समे आफिस के एही हाल ह, समे सुन रहल ना किरकेट कमेंटरी, अब हमनी फाइल देखीं कि किरकेट सुनीं! सऊँसे देस किरकेट के बुखार से परेसान बा।’

एगो जोरदार ठहाका लगल, फिर उ बोलले—‘एह बार भारत हार जाई का हो?’

ओहि बखत नथू पहलवान अंदर चल आईल, त उ चिल्लाकर बोललन—‘अरे गँवार देहाती, का बार-बार घुस आवत बाड़े रे! देखत नइखत कि देस हार रहल ह?’

‘बाबू कहीं त ओकरा जिता दीं’ नथू बोललस, त एगो जोरदार ठहाका लागल।

बाबू बोलले—‘इ ल, उहाँ कपिल, अजहरूदीन, मंजरेकर के रहते देस नइखे जीत पावत, त इ आईल हवन ओकरा जितावे, का कोई तंत्र-गंत्र जाने ल, कि बस अइसहीं बीड़ी गाँजा चढ़ाके चलल बाड़?’

नथू पहलवान अुनके दराज से पाकिट ट्रांजिस्टर निकललन आ ओकरा जमीन पर पटक के पैर से रौंद देहलन, फिर फाइल के ढेर उनकर सामने रख के बोलले—‘उतरल कि ना किरकिटिया बुखार? अब देखिह, देस जीत जाई बस तू आपन काम कर।’

दोसर बाबू लोग उहाँ से भगलन। बाबू उनकर फाइल देखे लगलन। *

'दिल का छोट'

वीरेन्द्र प्रसाद कानू
गहवा टोल, वीरगंज
ब्लाक नं. एल/२९८
(नेपाल)

शम्भू एगो सरकारी कर्मचारी हउवन। सरकारी काम मे त एक जगह से दोसर जगह बदली होत रहेला। ओहिसे शम्भू के आपन परिवार के साथे जगह-जगह किराया के मकान मे रहेके पडेला। एक दिन सबेरे-सबेरे मकान मालिक से कवनो बात पर बहस होगइल, जेकरा चलते तिन दिन बाद घर छोड़ देवेके आदेश सुनेके पड़ गईल।

शम्भूवो के उ मकान मे रहेके मन ना रहे ओहिसे उ दोसर मकान के तलास मे निकल पड़ल लेकिन कवनो बड़का शहर मे मकान मिलल बड़ा झंझटके काम बा। दू दिन बित गईल बाकि मकान ना मिलल।

अपनहि कार्यालय मे काम करेवाला स्थायी कर्मचारी जे इनकर बहुत करीबि इयार रहे जब ओकराके इ आपन बात बतवलन त उ कहलख "इहो कवनो मुश्किल काम बा, चिंता काहे कइले बाड हमरे मकान खालि बा। बिहान तु चल आऽव।

शम्भू खुश भइलन आ पुरनका मकान छोड़के नयंका मकान मे रहेलगलन। बाकि एके महिना बाद इनकर इयार कहेलागल कि "अब मकान तु खाली कर द। अब हमनी उहे मकान मे रहेम।" शम्भू लाख समझवलन कि "भलत एक महिना भईल, दया कर, रहेद"। बाकि इयार के व्यवहार

बदल गईल रहे उ तनको दया ना देखवलस आ मकान खालि कर वा लेलस।

कुछ दिन बाद शम्भू के मालुम भईल, उ मकान मे त नया किरायदार आ गईल बा आ शम्भू से बहुति किराया देवेला। शम्भू के मनमे बड़ा छोट लागल। उ समझ गइले की आज के भौतिकबादी जुग मे केहु केकरो नइखे। सब देखावटी संगत ह। काम पड़ला पर केहु केकरो मदद करेवाला नइखे। आजु के समय मे मानवीय सम्बन्ध के कवनो स्थान नइखे।

**स्वतंत्रता दिवस
(स्वर्ण जयंती)**

४८

१५ अगस्त १९६७ के दिन संसार के सबसे बडहन प्रजातंत्र महान भारत के स्वर्ण जयंती पर हमनी सभे राष्ट्र के सम्मान खातिर प्रतिज्ञा करी कि एकरे अखंडता, एकता आ धर्म निरपेक्षता के रछा करत हर प्रकार के प्रदूसन से मुक्त करब ! वन्दे मातरम्।

ब्रजेश मेहरोत्रा
भा०प्र०से०

समाहर्ता
प० चम्पारन
बिहार

मसूद हसन

अनुमंडलाधिकारी
बगहा, प. चम्पारन
बिहार

वन-महोत्सव

डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल'
बीमेन्स कॉलेज
जमशेदपुर-८३१००९

सरकारी सूचना आइल कि हर प्रखण्ड में वन महोत्सव मनावल जाए। वन मंत्री से सम्पर्क भइल। ऊ ५ जून के समय दिहले।

रामडीह गाँव के भाग जागल। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी चार-पाँच वार अइले। गाँव जवार के नेता लोग आइल। तय भइल कि सौ-सवा सौ आदमी के भोज दियाव। मुखिया जी ठीकेदारी में कमइले रहले। जवाहर रोजगार योजनो से उनका लइका के नीमन रोजगार मिलल रहे। ऊ चावल दिहले। राशन दुकानदार चीनी, दाल आ मसाला के जोगाड़ कइले। सुकरा के पाठ लिहल गइल। ओह बोका के तीन सौ रुपया मिलत रहे।

मंत्री जी अइले। भीषण भाषण भइल। भोज-भात चलल। आदिवासिन संगे फोटे खिंचाइल। ५ गो फेंड लगले स। बोर्ड लागल—'माननीय वन मंत्री ई पंचवटी लगवले।'

मेला उड़िसल। सुकरा के दाम ना मिलल। पानी के अभाव में पंचवटी सूखि गइल। हम एक दिन देखलीं—बोर्ड गिरल रहे। अखबारन में छपल—अब पर्यावरण सुधर जाई।

रउरा खाइले भोजपुरी के आ गाइले हिन्दी के ? तनिको सरम ना लागे ला ? महतारी के सेवा करी ?—संपादक

श्रीधरीछन मिसिर के चार गो कविता—
बादर

कुछ हमरे गरज सुन बादर, तुम अपने गरज सुनाव मति।

ज्यादे उमडल घुमडल छोड़ नेता अस भाव बनाव मति।।

चपका तोहार शृंगार हवे घपला उनके रोजगार हवे।

हमरा बुझात बा नेते के बादर तोहार अवतार हवे।।

दूनूँ के घटाघोप भारी दूनूँ धावेला फौकेला। दूनूँ का चपला घपला में दुनियाँ का सही न लौकेला।

तोहरा में क्षण प्रभा राजे उनहूँ में क्षण प्रभा राजे। बिहने सब धूकी उनका के जिनका के पूजत बा आजे।।

सोखेतन पानी आन कहीं बरिसे ल जाके आन कहीं।

नेता के छोड़ न दुनियाँ में बाटे तोहार उपमान कहीं।।

नेता सबमें बा दल उनके बादल तोहरा त नावें ह।

ऊपर बा राज तोहार सही नीचे सब उनके गावें ह।।

तू कब रहब कबका करब एकर ना किछु अन्दाज हवे।

इहवाँ आइल बा रामराज हो गइल किन्तु सिउराज हवे।।

तू हइए हउव मानसून नेतो सब होला मानसून।

विनती बा दूओ जने से कि बतिया हमार ल मान सून।।

नेते का अइसन ए बादर तोहरो भरपूर कहानी बा।

गरजेल ढेर मगर तोहरो ना कवनो गतरे पानी बा।। ■

'कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ'

भारत स्वतन्त्र भैल साढ़े तीन प्लान गैल,
बहुत सुधार भैल जानि गैल दुनियाँ।
वोट के मिलल अधिकार मेहरारुन का,
किन्तु कम भैल ना दहेज के चलनियाँ।।
एही दहेज खातिर बेटिहा पेरात बाटे,
तेली मानों गारि गारि पेरत बा घनियाँ।।
बेटी के जनम बा बवाल भैल भारत में,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
एके त कौर खा के रातो दिन रहे केपरी,
देहि के जरावे लगि भूखि के अगिनियाँ।।
खैला का पहिले आ पाछे थारी जाँच करे,
अझें बोला के कुछ माई आ बहिनियाँ।।
देर खइला से सभे लागी बदनाम करे,
ऐसने बा एकर खान्दान के रहनियाँ।।
एही तरे केतने महीना ले रहे के परी,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
जाँचे के हमार मन सासु धरि दीहें कबे,
हमरा बिछौना तर लड्डू अउर बुनियाँ।।
कुक्करो बिलार मूस आ के खाइ जाई तब,
उल्टे घुमाई लोग हमरे पर घनियाँ।।
हँसि-हँसि के बानी कबे बिगिहें जेठानी आके
सासु कहि दीहें ई त बड़ी बा चटनियाँ।।
हमरा सफाई के रही ना सुनवाई कहीं,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
ओठरा सासु दीहें कि एकरा नैहरवा से,
आइल कबे ना तनि ढंग से करनियाँ।।
एकर खान्दान जरिए के भिखमंगा हवे,
करनी ना कौनों बस खाली बा कथनियाँ।।
एकरा महतारी के फूआ वियाहलि रहे,
हमरा मौसी का घरे पांडे का जमुनियाँ।।
जानि गैनी एकरा से घर ना चली हमार,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
आजु जात बानी बन्द होके एक जेल बीच,
जेलर जहाँ के सासु नन्दी आ जेठनियाँ।।
हम के दिन रात डेरवैहें धमकैहें ऊ,

लंका में जानकी के जइसे रकसिनियाँ।।
दुइ चारिसाल के न बाटे जेल के ई सजा,
जेले में बीती अब सउसी जिन्दगनियाँ।।
कौनों अदालत सुनी एकर अपील नाहीं,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
चोरी चुगलाई हम आजु ले न कैनी कहीं,
तुरनी न कौनों सरकार के कनुनियाँ।।
कौन दफा बाटे लागू बा हमरा पर
एकर ना पौनी हम आजु ले समनियाँ।।
एकहू गवाही न गुजरल विपछ में बा,
केहू से न बाटे हमरा से दुसमनियाँ।।
बेकसूर हमके दियात जेल बाटे आज,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
काल कोठरी समान होई जेल खाना उहाँ,
जहाँ पैसि पाई ना प्रकास के किरिनियाँ।।
डेढ़ पोरसा पै कहीं जँगला एक होई त,
सासु उहाँ साजि दीहे झाँपी अउरन मोनियाँ।।
जेठो वैशाख में न सीँड़ सूखत होई जहाँ,
धूआँ से भरल घर होई कही कोन्हियाँ।।
चौकठ का भीतरे रहे केपरी आठो घरी,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
लेबे के साँस ना बतास ताजा पाइबि हम,
ओढ़े के परिहें कई पर्त के ओढ़नियाँ।।
कहियो त गोड़ बड़ा जोर झिंझिनाए लागी,
कहिओ दुखाए अगिआए लगी चनियाँ।।
डाक्टर कही कि कम भैल बा बिटामिन बी,
नैहर के भूत कही ओझा और गुनियाँ।।
केकर जवाब कौन कैसे दे पाइबि हम,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।
चौदहे वरीस घर राम छोड़ि दिहले त,
पोथी के पोथी लोग लिखले कहनियाँ।।
जन्मभूमि छोड़ि देत बानी आजीवन हम
माथ पै चढ़ा के माई बाप के बचनियाँ।।
हमरी बेर बाकी त दुकाहें दो सूखि गैल,
वालमीकि, व्यास, कालिदास के कलमियाँ।।
हमरा ए त्याग पै लिखाइल ना ग्रन्थ एको,
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ।।

‘सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर’

आइल सुराज बा सही सुनात बात कान में।
न औंखि से देखाता न आवते बा ध्यान में॥
सुराज ना देखात बा जवार में मथार में।
न ढाब ढाठ भाठ में न बाँगरे कछार में॥
न खेत में न पेट में ना बेड़ी में, बखार में।
न नोट में न कोट में न सौक में सिंगार में॥
न बोर्ड में बजार में न मिल में रोडवेज में॥
न श्राद्ध में वियाह में न दान में दहेज में॥
अकाल डाल वस्त्र के सवार बा कपार पर।
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ १॥

बनत बिकास जोजने त भोजने अजूर बा।
अराज हो भले न किन्तु नाज त जरूर बा।
गर्लर दिल में बा मगर दिमाग में न लूर बा।
त दाब हाँक उठि गइल बिला गइल सहर बा॥
गुरु डरत बा छात्र से मिलमालिकों मजदूर से।
पटवारियो सब पैंतरा लगा रहल बा दूर से॥
त माँग पौनपूत पोछि का समान डींग के।
अंगद चरन के अनुकरन परन बा चरन सिंह के॥
सदभाव के अभाव बा निर्णय बा जीत हार पर।
सुराज जगमगात बा अनशन तथा तकरार पर॥
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ २॥

त जो जना के जात लोग जोजना रचत रही।
देहात में दियात मत न बात बा सही—सही।
त जेल जे गइल रहे ऊ आज खुलि के खात बा।
जीए के जाहिरा अलम्म जोहि के दियात बा॥
त रोज नया जोजना के गोजना गोंजात बा।
आ जोजना के जरि इहे बा सोझ ना कहात बा॥
आ खोज ना बा के कहाँ बा लाख पर हजार पर।
सुराज सुख सुलभ सजी संयोग पर सुतार पर॥
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ ३॥

जने—जने के जोजना बना—बना तैयार बा।
ए जोजना में ओज ना बा किन्तु सब असार बा॥
ई जोजना चले के जंत्र डालरे उधार बा।
जो एक जोजना चला के होत कहीं कार बा॥

त ‘बन्द करो बन्द बस’ आवत तुरन्त तार बा।
दिल्ली दउलताबाद के दसा दुसह हमार बा॥
त जोजने जने का जुकित में सभे जुझार बा।
ए जोजना के जोजने भरे से नमस्कार बा॥
रोवल न ठीक बा मगर हँसी कवन अधार पर।
सुराज के न बस चले बलेक का बजार पर॥
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ ४॥

बा एकता अखण्ड अब रियासतन का लोप से।
बा डर विसेष सेष प्रान्तवाद का प्रकोप से॥
गुरुमन्त्र हिन्द लेत बा अमेरिका यूरोप से।
भागत फिरत बा देखते डरो के अब अछोप से॥
डरत बा लाल पाग आजकल सफेद टोप से।
सासन के शुरुआत बा अनुसासने का लोप से।
आ कोड बिल में हो गइल जोरु जबर भतार पर।
सुराज जियत खात बा विदेश में प्रचार पर॥
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ ५॥

राजा रइस का जगह नेता सभे पुजात बा।
हटा के जर्मीदार कुर्कमीन अब रखात बा॥
त बुद्धि का अजीर्न के केछू कहीं सनकि गइल।
पद लोभ का प्रभाव से प्रान्तीयता पनकि गइल॥
त यूनियन बना—बना सब बर्ग बरना गइल।
अध्यापको समाज जा के लखनऊ धरना धइल॥
मिटा के जर्मीदार भूमिधर के सृष्टि होत बा।
आ सीरदार के भइल पहिले से अधिक पोत बा॥
आ वर्ग वन विपत्ती बा गरीब का बूतकार पर।
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ ६॥

गजर बजर भइल सजी बजर परी बुझात बा।
नजर गइल कहाँ अगर जो दस गुना मँगात बा॥
सख्या बेकार व्यक्ति के जगह जगह अपार बा।
सुराग एक नौकरी के देत जो अखबार बा॥
जूटत हमार लोग बा माछी मनों खँखार पर।
आ योग्यता के मुहर बा भाई, भतीजा, सार पर॥
बेताल बा देखात अबे डर पर, डार—डार पर।
सुराज बा टिकल विशेष भुखमरी पेट जार पर।
सदस्य फोर फार जोर जार की सरकार पर।
चुनाव खर्च दान में समर्थ साहुकार पर॥
सरपन्च का दुआर ब्लाक से मिलल उधार पर।
काँगरेस का हड़वार पर गाँधीजी का जयकार पर॥
सुराज सैर करत बा मिनिस्टरन की कार पर॥ ७॥

कुक्कर के कहानी

जवना कुक्कुर के नाँव अधिक जनता ओह घरी बतावेले ।

ओही कुक्कुर का गटई में सिकरी सरकार लगावेले ॥

वेतन भत्ता से जकड़ि जकड़ि भेजले सबके रजधानी ।

पाके सगरे सुनहाव इहाँ तब राज करेलें मनमानी ॥

ओहि में से एको मूवेला तब और नया बीनल जाला ।

कवरा खारित हमनी का आगे के थरिया छीनल जाला ॥

अइसन का बन्हवा कुकुरन के संख्या ना दु चार हवे ।

सगरे भारत मिल के टोटल किछुवे कम चार हजार हवे ॥

पहिले जनपद से एक-एक अब तहसीले से चार-चार ।

किछुवे दिन में हर गावें से ले जाए खातिर लगी कार ।

हमरा ना तनिको बा बुझात कवरा एतना कब तक आँटी ।

आ सब कुक्कर कासी जइहें तब के इहवाँ पत्तल चाटी ॥

एक दीन मिटा दिहलें संका जे कुकुरे रोज चरावेलें ।

कुकुरन के कवरा ना देलें कुकुरन से कवरा पावेलें ॥

कवरा पत्तल किछुज न मिले ई तब्बो ना अगुताले, सन ।

एकनी के अइसन जाति हवे कि सुखलो हाड़ चबाले सन ॥

खटमल अइसन कुकुरो कुछ दिन तक खोंख पाखि के जियेले ।

कहियो ना कहियो तक दिन लौटेला तब लोहू पीयेले ॥

कुक्कुर सगरे हमरे हउवन धन लागत सजी हमार हवे ।

कवरा देदे फुसिलावे के बीचे मालिक सरकार हवे ॥

दुनिया के औरी कई देश अब इहे चालि अपनावता ।

दुनिया भरके सब राजनीति बस एतने में चलि आवता ॥

बोलतू कुकुरन के बान्हि बान्हि कतहीं पर एक जगह कर दीं ।

कुरसी दे दी लमहर-लमहर कवरा मजगर लमगर दे दीं

परजा का केतना सुख दुख बा केहु जोखले बा कि नपले बा ।

एकनी के मुँहवा बन्द रही त प्रजातंत्र त सफले बा ॥

यह युग में राज चलावे के सबसे बढ़ियाँ ई मंत्र हवे ।

इहे नु हवे समाजवाद ईहे नू प्रजातंत्र हवे ॥

सरकारी कवरा जवन कुकुर जवना दिन से ना पावेला ।

ओही दिन से ऊ जोरदार जनता में अलख जगावेला ।





पाती मिलल

प्रिय पाण्डेय जी,

नमस्कार ! बिना कउनो तारीख के राउर कै पाती मिलल। 'पुरुवैया' निकालत हई, जान कर खुसी भइल। भगवान करें राउर अउर राउर कै साथ लोग यह काम में कामयाब रहें। हमार असीस हमेसा ओकरे खातिन बनी रही।

लेकिन एकगो हम के दुबिधा बा। जब राउरा खुद हिन्दी में पाती लिखत हई तौ भोजपुरी के उन्नति कै सकिन ला ? पहिले घर में बाती बार के मस्जिद में बाती बारल जाले। कहारन के भातिन बहुत लोग हां हां करेला लेकिन हम कोई के ना कुछ देखत बाटी। ई बात आजु से नहीं, बहुत दिन से देखत चल आवत हई। आरा के रघुवंश नरायन सिंह बहुत उत्साह दिखउलन। भोजपुरी का एक पतरिका निकलन पर दू-चार अंक निकाल के हिमति हार गइलें। भोजपुरियन के कान पर तनिको चिल्लर रेंगले ? पाण्डेय कपिल पटना में एक अखिल भारतीय भोजपुरी संस्था बनउलन। उहो एक गो पतरिका निकलन। बाकि आज ऊहो कउनो सुनगुन न हौ। हमें लाज आवे कै चाही मैथिली लोगन के देख के। ऊ लोग घर में आपना भाखा तो बोलवै करें, बाहरे भी जहां इ दू मैथिल मिलिहैं मैथिली में बात करि हैं। एक हम भोजपुरिन होवै के दम भरीला लेकिन हम कबहू दुई भोजपुरियन के मिलले पर भोजपुरी में बात करत कम ही देखलीं। हम गांव गंवई के बात न कहत हई। उहां का हाल बा, नाही जानी। बहुत दिन से गांवे में जाये रहे कै मौका ना मिलल। लेकिन जउन कुछ अपने चारों ओर देखत हई (महाराष्ट्र कना, यू०पी० कै बात कहत हई)

तो घर में भोजपुरी क जगह बहुत कुछ हिन्दी ले लेत बा।

पहिले क बहुरिया कतहों से अपने घर में बियाह के आवत रहली तो सास-ननद के साथ रहत-रहत भोजपुरी बोलत लागत रहीं। अब त एकर उलटा होत हवे। बहुरिया भोजपुरी बोले का सिखिहैं ? सास ननद के उलटे उन कै भासा में बोले कै पडेला। जब ई हालत हव तब हमरे समझि में ई बात ना आवत कि रउरा 'पुरुवैया' निकाल के केतना भाड़ फोड़ लेब, उहो दिल्ली से।

ई बात हम राउर उत्साह के कम करे के खातिर नाहीं, बलुक जउन असलियत हव वह जतावत हई। अइसन करीं कि 'पुरुवैया' में जउन कुछ छपे भोजपुरिए में ही होखे। आजु भोजपुरी के नांव पर जउन कविता, कहानी-लेख लिखल जाले ओम्मे भोजपुरी कम हिन्दी ही जियादा होखे। इन लिखवैयन के चाही कि भोजपुरी सबदन के जाने समझें अउर ओके लिखें।

ये कर मतलब ई ना कि हम हिन्दी क विरोध करत हई। ऊ तो हमरे देस कै भाखा हव। लेकिन जब हम भोजपुरी कै बात करीं तो ऊ ठेठ भोजपुरी होखे चाही। कोसिस ई बात कै होखे कै चाही कि लोग भोजपुरी के सबदन के जाने, समझें। एकर सबद अब हीं बिखरल बा। ओके समेटे कै चाहीं। यही खातिन गणेश चौबे जी भोजपुरी सबदन कै एक कोस तइयार करत रहलैं। ओके देखे कै चाहीं। हमरे कहल कै बुरा न मनिहा। छिमा करिहा। राउर

(डॉ०) परमेश्वरी लाल गुप्त

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च

इन न्यूमीस्मेटिक स्टडीज

अंजानेरी, नासिक-४२२२१३

महाराष्ट्र



- सही समय पर ऊंख दाम
- खेती ला सहयोगी रिन
- बढ़ियाँ गन्ना का उपज पर इनाम
- खेतिहर के सम्मान
- हमार सुरुए से नीति बा

एस० एन० पोद्धार

प्रधान व्यवस्थापक

हरिनगर चीनी मिल्स लिमिटेड
हरिनगर

प० चम्पारन, (बिहार)

कम्प्यूटर सैटिंग—सतीश कुमार चौहान ३६०/ई मूर्ति बाबरपुर, शाहदरा, दिल्ली-३२

सहजोगी दाम—सोलह रुपया/पचास पड़ा